ECL

ज्योत्स्ना

ईसीएल की राजभाषा पत्रिका

अंक–21 (अक्टूबर, 2023 – मार्च, 2024)

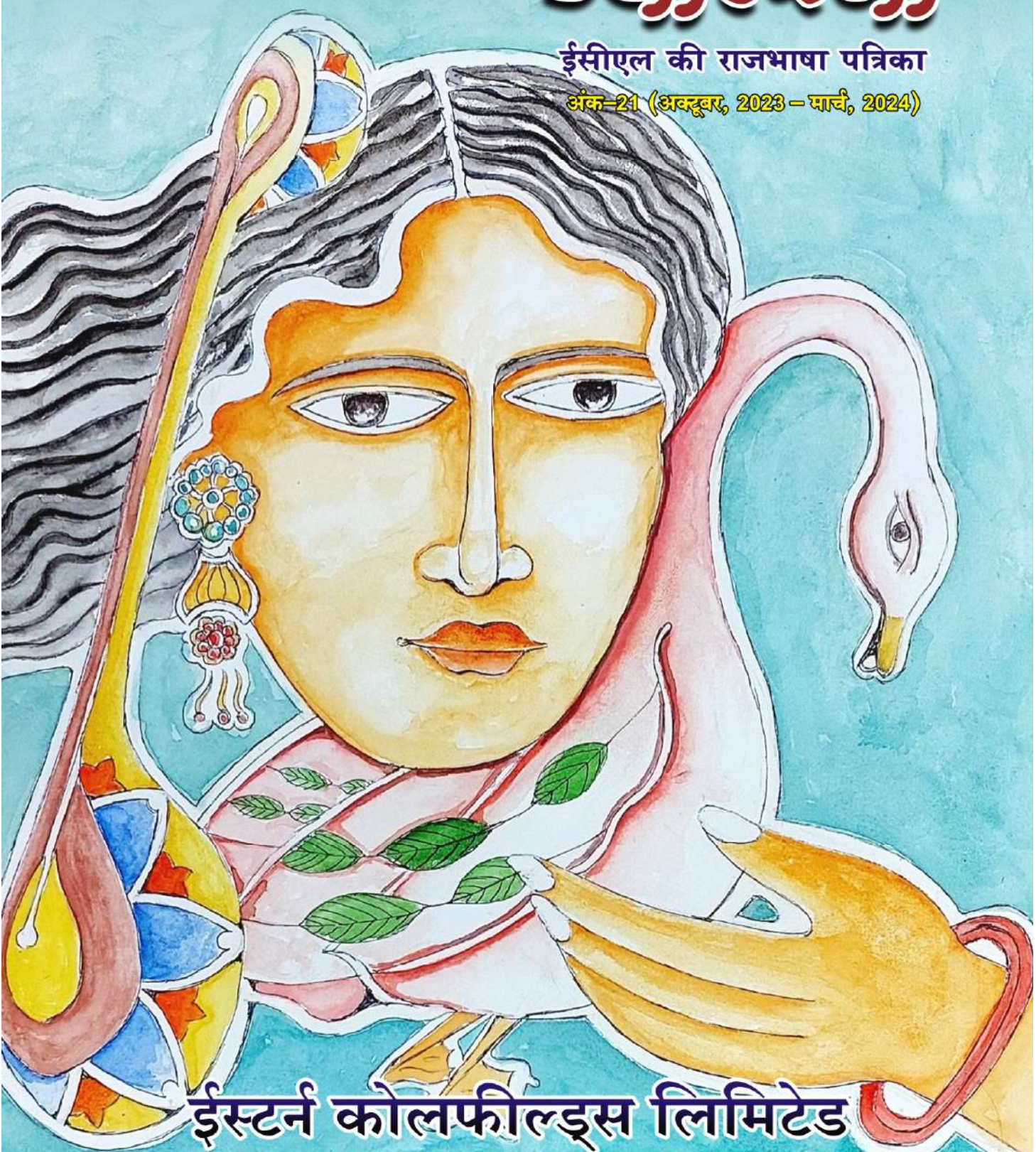

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

(कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी)

ज्योत्स्ना

अंक–21 (अक्टूबर, 2023 – मार्च, 2024)

☞ **मुख्य संरक्षक :**
श्री समीरन दत्ता
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

☞ **संरक्षक:**
श्री मुकेश कुमार मिश्रा
मुख्य सतर्कता अधिकारी

मो. अंज़ार आलम
निदेशक (वित्त)

श्रीमती आहुती स्वाईं
निदेशक (कार्मिक)

श्री नीलेंदु कुमार सिंह
निदेशक (तकनीकी) यो. व परि.

श्री नीलाद्री रॉय
निदेशक (तकनीकी) संचालन

☞ **संपादक :**
सुश्री सुमेधा भारती
राजभाषा विभाग

☞ **संपादकीय सहयोग :**
श्री जसविंदर सिंह घुमन
राजभाषा विभाग

☞ **आवरण :**
श्री रघुनाथ माजी
गुणवत्ता नियंत्रण विभाग, ईसीएल

अस्वीकारोक्ति

'ज्योत्स्ना' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल, राजभाषा विभाग अथवा ईसीएल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। 'ज्योत्स्ना' में प्रकाशित आलेखों में प्रयुक्त मानचित्र, प्रतीक, छवि आदि आधिकारिक नहीं है, बल्कि सांकेतिक हैं।

संपर्क सूत्र

राजभाषा विभाग, ईसीएल मुख्यालय, सांकतोड़िया,
पोस्ट : डिसेरगढ़, जिला : पश्चिम बर्द्धमान,
राज्य : पश्चिम बंगाल, पिन : 713333
ई-मेल : ecl.hq.rajbhasha@gmail.com
hodrajbhasa.ecl@coalindia.in

अनुक्रमणिका

लेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं०
❁ शीर्षस्थ मण्डलों का संदेश, संपादकीय		1-9
❁ तकनीकी लेख :		
COALRR सॉफ्टवेयर	पार्थ सखा डे	10
अदालत में भारतीय भाषाएँ	राजेन्द्र राम	13
❁ कहानी :		
बदला	दिलीप कुमार आचार्य	15
छोटी-सी उड़ान	नन्दिनी पान	16
❁ कविता :		
संभाल लेती हूँ	भावना	18
साहिल की कलम से	सुशील ठाकुर 'साहिल'	19
शुक्रिया	कृति गुप्ता	20
आज फिर से जीना आया है	आरती गुप्ता	21
जय हो	डा. समंबिता जाणा	21
❁ प्रेरणा :		
लालच	सुमेधा भारती	22
❁ लेख :		
क्षमा से क्षमता	धरम मंडल	23
कुम्हार	बिट्टू कुमार	24
गुरुमुखी लिपि एवं पंजाबी भाषा	जसविन्दर सिंह घुमन	25
वसुधैव कुटुम्बकम्	आरती कुमारी	27
हाय ये जालिम गर्मी	राजकुमार आश्रे	30
मेरे जीवन का लक्ष्य	अनुराधा कुमारी केवट	31
❁ स्त्री शक्ति :		
खेलकूद में महिलाओं के बढ़ते कदम	करुणा सिंह	32
❁ शब्द संस्कार :		
तथा, व, और, एवं में अंतर	विश्वजीत मजूमदार	34
❁ गतिविधियाँ :		
नयी सोच, नयी पहल	केतन दीक्षित	36
ईसीएल में राष्ट्रीय युवा दिवस, 2024 का हर्ष		38
सांस्कृतिक समागम 2024 ; राजभाषा विभाग, ईसीएल		39

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

संदेश

ECL

राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में ईसीएल का सशक्त योगदान

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी है जो पश्चिम बंगाल और झारखंड राज्य में कार्यरत हैं एवं राष्ट्र की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कोयले के उत्पादन के साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए राष्ट्र के सपने को पूरा करने में अपनी महती भूमिका निभा रही है। भारत को स्वतंत्रता के 100 वर्षों में एक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूर्ण करने के लिए सभी का योगदान अत्यंत आवश्यक है और हम अमृत काल के मार्ग पर चल पड़े हैं, और सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं।

कोयला उद्योग देश के दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित होती है जहाँ लोगों की आकांक्षाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हमने अपने आस-पास के समुदाय के साथ मिलकर सभी के विकास के लिए कार्य किया है। पिछले 4 वर्ष उल्लेखनीय रहे हैं क्योंकि हमने कोविड-19 की चुनौती का एक साथ सामना किया, कठिन समय को पार किया और एक साथ विकास की ओर आगे बढ़े।

हमारे आसपास का समुदाय हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे हमें कोयला खनन के लिए आवश्यक स्थान प्रदान करते हैं और उनके पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए हमारे दायित्वों को बढ़ाते हैं, जिसका हम पूर्ण मनोयोग से निर्वहन करते हैं।

हम अपने सभी परिचालित क्षेत्रों में रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर पैदा करते हैं। अस्पताल, विद्यालय, आधारभूत संरचनाओं की अधिस्थापना करते हैं और एक स्थानीय अर्थव्यवस्था बनाने में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, हम अपनी अतिरिक्त जिम्मेदारी, यानी निगमित सामाजिक दायित्व को भी पूरा करते हैं एवं कंपनी द्वारा विनियम और नीति के तहत आवंटित धनराशि को पूरी तरह से स्थानीय क्षेत्रों के लोगों के विकास पर व्यय करते है।

ईसीएल अपनी सीएसआर परियोजनाओं के द्वारा भारत सरकार के संकल्पों एवं दृष्टिकोणों के साथ समन्वय स्थापित कर अपनी परियोजनाओं को कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में कुशलतापूर्वक कार्यान्वित कर रही है।

कोविड-19 के कठिन समय के दौरान, हमने पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में जिला प्राधिकरण को संबल प्रदान करते हुए देवघर, गोड्डा, दुमका और जामताड़ा को दूसरी लहर के दौरान वित्तीय वर्ष 2021-22 में आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराके उनके स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में सुधार, महत्वपूर्ण स्वास्थ्य उपकरणों की अधिप्राप्ति में, अस्पताल में अतिरिक्त रोग शय्या बिस्तर आदि सुविधाएं उपलब्ध कराने में सहायता की।

जबकि वैश्विक अर्थव्यवस्था में वृद्ध आबादी में वृद्धि के कारण युवा कार्यबल की कमी होने जा रही है, भारत, सबसे युवा राष्ट्र होने के नाते युवा अधिशेष है। भारत के लिए यह ''जनसांख्यिकीय लाभांश'' हमारे राष्ट्र को एक बढ़त देती है, यदि युवा वर्ग को शिक्षित किया जाए और कौशल युक्त रोजगार व स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित किया जाए। इस जनसांख्यिकीय लाभांश से लाभ उठाने के उद्देश्य से, ''कौशल भारत कुशल भारत'' के नारे के साथ भारत सरकार द्वारा स्किल इंडिया मिशन शुरू किया गया। जिस क्रम में, ईसीएल ने 5 ट्रेडों के साथ सिकिटिया, गोड्डा में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान को वित्त पोषित करना शुरू किया और अब तक लगभग 540 उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें से आधे ईसीएल की राजमहल परियोजना के समीपवर्ती गांवों से आते हैं। ईसीएल ने 15.29 करोड़ रुपये की वित्तीय प्रतिबद्धता के साथ 10 साल तक इस संस्था को चलाने का जिम्मा उठाया है।

इस संस्थान से पास होने वाले युवाओं को भारतीय रेलवे, जेबीएम ऑटो लिमिटेड, औरंगाबाद ऑटो एंसिलरी लिमिटेड आदि अच्छी कंपनियों में नौकरियाँ मिल रही है। ईसीएल ने वर्ष 2020 में 420 युवाओं के आवासीय प्रशिक्षण के लिए सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के साथ भी काम किया है और अब तक 402 युवाओं को प्रशिक्षित किया है। इन युवाओं द्वारा प्लास्टिक इंजीनियरिंग ट्रेडों में 6 माह का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद प्लेसमेंट का अवसर मिल रहा है। ईसीएल ने युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए परिधान प्रशिक्षण और डिजाइन केंद्र, एसएसआरडीपी ट्रस्ट जैसी एजेंसियों के साथ भी काम किया है। इस कौशल मिशन ने लगभग 2000 वंचित युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त करने और उद्योगों को प्रशिक्षित युवा प्रदान करने में मदद की है।

भारत सरकार के जनकल्याणकारी संकल्प "मिशन हेल्थकेयर" को सभी के लिए सुलभ, किफायती और न्यायसंगत बनाना है। ईसीएल, पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान जिले में अवस्थित अपने दोनों केंद्रीय अस्पतालों (सांकतोड़िया एवं कल्ला) और अपने क्षेत्रीय अस्पतालों, डिस्पेंसरियों और डिजिटल डिस्पेंसरियों के जरिए सस्ती दरों पर मुख्यालय सहित समस्त खनन क्षेत्रों के समीपवर्ती एवं दूर-दराज के इलाकों के जनसमुदाय को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराती है। इसी क्रम में, वर्तमान में ईसीएल द्वारा 5 (पांच) मोबाइल मेडिकल वैन जन-जन को अपनी सेवाएँ दे रही है जो हर महीने 200 गांवों की सेवा करती हैं। डॉक्टर रोग का निदान करते हैं और रोगियों को मुफ्त उपचार और दवा प्रदान करते हैं एवं गत 4 वर्षों में अब तक लगभग एक लाख से अधिक जन स्वास्थ्य सेवा की गयी है। हम हर साल लगभग 1.5 करोड़ रुपये व्यय करते हैं ताकि स्वास्थ्य सेवा को हर घर तक पहुंचाया जा सके और सबको सही स्वास्थ्य सेवा सुलभ हो सके।

हम महागामा, गोड्डा में मेडिकल कॉलेज में परिवर्तित होने की क्षमता वाला मल्टी-स्पेशिऐलिटी अस्पताल बना रहें है। संथाल क्षेत्र में एम्स देवघर के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा अस्पताल होगा एवं दुमका और गोड्डा क्षेत्र में पहला सुपरस्पेशिऐलिटी अस्पताल होगा। कोल इंडिया लिमिटेड और ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने इस 300 बिस्तरों वाले अस्पताल के निर्माण के लिए 307 करोड़ रुपए अनुमोदित किए हैं। अस्पताल का निर्माण और परिचालान झारखंड सरकार द्वारा किया जाएगा। ईसीएल एवं सीआईएल इस अस्पताल के लिए 50%-50% निधि प्रदान कर रहा है व अस्पताल का कार्य प्रगति पर है। अस्पताल झारखंड सरकार द्वारा चलाया जाएगा और आस-पास की आबादी को मुफ्त उपचार प्रदान करेगा।

गोड्डा जिले के 07 प्रखण्डों के 23 स्वास्थ्य उप-केंद्रों की स्वास्थ्य सेवाओं को पुनर्जीवित करने के लिए ईसीएल प्रबंधन द्वारा गोड्डा जिला प्राधिकरण संग 2.73 करोड़ का समझौता ज्ञापन किया गया है। यह समझौता जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे आम जनों को उनके घर के समीप चिकित्सा सुविधाएँ मुहैया हो सकेगी।

साथ ही, हम स्थानीय जरूरतों को प्राथमिकता देते हैं जैसे पानी की आपूर्ति के लिए प्रेशर फिल्टर, वाटर एटीएम, स्कूलों के लिए कक्षाओं का निर्माण, ग्रामीण सड़कों का निर्माण, गांवों में ग्रामीणों को सौर लाइट प्रदान करना, स्थानीय जरूरतों के अनुसार सामुदायिक भवन का निर्माण आदि। सीएसआर के तहत हमने स्थानीय आबादी के लाभ के लिए लगभग 40 करोड़ रुपये व्यय किए हैं। हमने हस्तशिल्प परियोजनाओं, महिलाओं के लिए मशरूम की खेती परियोजनाओं से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए योजना भी शुरू की है क्यूंकि "जब महिलाएं समृद्ध होती हैं, तो राष्ट्र प्रगति करता है"।

समाज एवं राष्ट्र दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। समाज सशक्त एवं समृद्ध होगा तो क्रमशः राष्ट्र सशक्त एवं समृद्ध होगा। इसलिए ईसीएल सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देती है और अपने सीएसआर गतिविधियों में निरंतर वृद्धि एवं सफल कार्यान्वयन के लिए सदैव संकल्पित रहती है। भारत सरकार के संकल्प एवं दृष्टिकोण हमें नित्य राष्ट्र की सेवा करते रहने के लिए बल प्रदान करता है। हमारी परियोजनाएँ कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में राष्ट्र के औद्योगिक जगत एवं जनमानस को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने के लिए नित्य श्रमरत है।

जय हिंद ।

(समीरन दत्ता)
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

ECL

संदेश

प्रिय साथियो,

कंपनी में कई विभागों द्वारा पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन का मूल उद्देश्य कर्मियों में वैचारिक समरसता व संरचनात्मक तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना होता है। इससे उनमें पठन-पाठन की प्रवृत्ति जाग्रत होती है। राजभाषा विभाग से प्रकाशित होने वाली पत्रिका "ज्योत्स्ना" हमारे कामगार साथियों की लेखन क्षमता को उजागर करने के लिए एक मंच प्रदान कर रही है। यह प्रक्रिया नित्य जारी रहे, ऐसी कामना करता हूँ। पत्रिका में अविरल गुणात्मक सुधार होते रहे। पत्रिका में भाषा का रूप यथासंभव सरल हो तो ये हर वर्ग के पाठकों तक अपनी पहुँच स्थापित करने में सफल होगी। "ज्योत्स्ना" का 21वां अंक अपनी सामग्री के साथ पठनीय एवं संग्रहणीय हो। पढ़ते रहें, लिखते रहें और आगे बढ़ते रहें।

शुभकामनाओं सहित !

(मुकेश कुमार मिश्रा)
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संदेश

ECL

उन्नति की ओर उठते कदम

मेरे प्यारे साथियो,

प्रत्येक विषय के दो पहलू होते हैं जिसमें एक, दूसरे से सर्वथा भिन्न होता है और इन दोनों परिस्थितियों में सटीक समन्वय स्थापित कर जो नियत लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अग्रसर होता है वहीं उन्नति के शिखर पर सुशोभित होता है। समय कभी एक-सा नहीं रहता और समय के साथ ताल से ताल मिलाकर चलने के लिए प्रत्येक व्यक्ति, समाज या यों कहें इनसे मिलकर बना जो राष्ट्र अपने पूर्व की गलतियों को ना दोहराकर बल्कि उनसे सीख लेते हुए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं वही उन्नति के पथ पर गतिमान रहते हैं। आज हमारा देश उत्कर्ष के नए-नए आयाम को पार कर सम्पूर्ण जगत में नित नूतन कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

राष्ट्र उन्नति किसी एकल प्रयास से नहीं बल्कि परिश्रम रूपक संयुक्त प्रयास से होती है। अतः राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्र की हर छोटी-बड़ी कम्पनी अपने जनशक्ति के माध्यम से राष्ट्र-उन्नति में सहयोग करती है। कोल इंडिया के समस्त अनुषंगियों में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड सर्वाधिक जनशक्ति वाली अनुषंगी है और इसमें कार्यरत कर्मठ कर्मियों के अथक प्रयास से समस्त अनुषंगियों में ईसीएल का अपना एक अलग ही स्थान है। ईसीएल के समस्त कोयला खनन क्षेत्रों में उन्नत व अत्याधुनिक मशीनों एवं नए-नए उपकरणों के उपयोग ने कोयला उत्पादन और प्रेषण को सहज बना दिया है। कोयला उत्पादन की प्रक्रिया में आए दिन आशा से अधिक कोयला उत्पादन कर कम्पनी सतत नई उपलब्धियाँ हासिल करती जा रही है जो न केवल ईसीएल कामगारों के लिए बल्कि कोल इंडिया के समस्त कर्मियों के लिए गर्व का विषय है।

अशनादिन्द्रियाणीव स्युः कार्याण्यखिलान्यपि ।
एतस्मात्कारणाद्वित्तं सर्वसाधनमुच्यते ।।

पंचतंत्र की उक्ति है कि भोजन का जो संबंध इंद्रियों के पोषण से है वही संबंध धन का समस्त कार्यों के संपादन से है। इसलिए धन को सभी उद्देश्यों की प्राप्ति अथवा कर्मों को पूरा करने का साधन कहा गया है। वित्त किसी भी राष्ट्र के अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा कहलाती है जो अर्थव्यवस्था को सबलता प्रदान करने के साथ-साथ राष्ट्र को सशक्त और समृद्ध बनाता है। अपनी स्थिति मजबूत करते हुए ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में योगदान दे रही है। समस्त ईसीएल कर्मियों से अनुरोध है कि आइए हम सभी अपने संयुक्त सहयोग एवं योगदान से अपनी कम्पनी और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले चलें।

जय हिन्द !

(मो. अंजार आलम)
निदेशक (वित्त), ईसीएल

संदेश

ECL

संस्कृति की छाया - भाषा

मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति का सूचक जहाँ सभ्यता होती है वहीं मानसिक प्रगति का सूचक वहाँ की संस्कृति होती है और भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा संस्कृति के मूल तक का ज्ञान अर्जित किया जा सकता है। विश्व में अनेक संस्कृतियों का आगमन हुआ और समय की धारा के साथ उनका पतन भी हुआ लेकिन भारत की अति उन्नत और समृद्ध संस्कृति आदिकाल से ही अपने अस्तित्व के साथ अपना वर्चस्व बनाए हुए है। भारतीय संस्कृति मानवीय जीवन मूल्यों का एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करती है जिसे अन्य प्रत्येक संस्कृति ने न केवल सराहा बल्कि उसे आत्मसात कर सफलता का परचम लहराया है।

वर्तमान समय में भारतीय विश्व के प्रत्येक जगह पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर न केवल उन्नत भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहें हैं वरन यहाँ की भाषाओं की ख्याति चहुँओर फैला रहे हैं और इन भाषाओं की सरलता, सहजता और सुग्राह्यता के कारण अन्य देशों की संस्कृति ने उन्मुक्त हृदय से इसे अपनाया है। संपूर्ण विश्व द्वारा भारतीय भाषाओं को अपनाने का एक बहुत बड़ा कारण है संस्कृत निष्ठ भारतीय भाषाओं का विशाल शब्द भंडार एवं अपने शब्दकोश में अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता। राष्ट्र की उन्नति में भाषा की बड़ी अहम भूमिका होती है जिसका उदाहरण है विश्व के ऐसे विकसित राष्ट्र जो अपनी पुरातन सभ्यता संस्कृति और भाषा से जुड़े रहे और अनुकूल हो या प्रतिकूल समस्त परिस्थितियों का दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए उन्नति के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया।

राष्ट्र ऊर्जा आपूर्ति में सहयोग करते हुए अपनी संस्कृति और भाषा के संवर्धन तथा हिन्दी एवं बांग्ला भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के निमित्त ईसीएल के राजभाषा विभाग द्वारा छमाही हिंदी पत्रिका "ज्योत्स्ना" एवं बांग्ला पत्रिका "मृदंगार" का प्रकाशन किया जाता है जिसके हर अंक में ईसीएल संबंधी नीति की जानकारी होती है। पत्रिका के माध्यम से ईसीएल में कार्यरत कर्मियों की रचनाशीलता की झांकी देखने को मिलती है साथ ही यह पत्रिका अपनी भाषा, हिन्दी भाषा, के प्रति अगाध प्रेम का भी परिचायक है। हमें गर्व है अपनी पुरातन भारतीय संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी कंपनी ईसीएल पर।

हार्दिक शुभेच्छा।

(आहुती स्वाईं)
निदेशक (कार्मिक), ईसीएल

संदेश

ECL

रोमांच : जीवन का अभिन्न अंग

मेरे प्यारे साथियो,

मंजिलें कभी खुद चलकर नहीं आती हैं, लक्ष्य को साध कर उसे हासिल करना पड़ता है।

स्वयं को जीवंत बनाए रखने के लिए जीवन में रोमांच का होना अति आवश्यक है, रोमांच प्रति पल हमारे अंदर एक सकारात्मक ऊर्जा का सतत प्रवाह करता रहता है जो कुछ बेहतर करने को प्रेरित करता है। हर नई सुबह एक नए उत्साह से हमें भरकर कल की तुलना में और उत्तम करने को प्रोत्साहित करती है।

रोमांच जुनून का पर्याय है और यह जुनून जब अपने चरम पर होता है तब एक भाव उत्पन्न होता है जो है पूर्णतः समर्पण और निष्ठा का भाव। पूर्ण समर्पण और निष्ठा भाव से किए गए कार्य में सफलता के साथ-साथ एक संतोष की अनुभूति होती है और यह संतोष की अनुभूति इंद्रियों को संयमित करती है। संयमित इंद्रियाँ न केवल मन को मजबूत बनाती है बल्कि व्यक्ति को सोचने समझने की सही दिशा प्रदान करती है जिसके कारण एक सटीक निर्णय लेने की शक्ति आती है। जब मन मजबूत होता है तो कैसी भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ आए व्यक्ति शांत और संयमित रहकर उस विकट परिस्थिति का सामना करता है और कोई न कोई राह अवश्य निकाल लेता है।

हम समस्त कोल कर्मियों के जीवन में प्रतिपल एक रोमांच रहता है क्यूँकि प्रत्येक दिन एक चुनौती लिए हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। कंपनी द्वारा तय लक्ष्यानुसार कोयला उत्पादन करना और सुगम तरीके से बाजार तक कोयले की आपूर्ति करना, यह चुनौती प्रत्येक दिन रहती है और जब कामगार बेहतर प्रदर्शन करते हुए उत्पादन की ऊँचाइयों को छूते हैं तब हमारा रोमांच दुगुना हो जाता है और फिर अगले नए लक्ष्य की ओर हम उन्मुख होते हैं। यह एक सतत क्रिया है जो अबाध चलती रहती है जिस पर न केवल एक व्यक्ति विशेष या उसके परिवार या कंपनी वरन सम्पूर्ण राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। यह कार्य एक दिन का कार्य नहीं है और ना ही किसी एक के प्रयास से संभव है यह संभव है हम सबों के एकीकृत और समष्टि प्रयास से। आइए हम सब संयुक्त प्रण लें एवं कंपनी और राष्ट्र के उन्नयन में भागीदार बनें।

संयुक्त होकर प्रण करें, विपत्तियों से ना डरें
हमारे ऐसे हों प्रयत्न कि सारे विघ्न हों जाएं नत।

(नीलेंदु कुमार सिंह)
निदेशक (तकनीकी) योजना व परियोजना, ईसीएल

संदेश

ECL

राष्ट्र के प्रगति में संथाल परगना का सराहनीय योगदान

हिमालय से भी पुरानी राजमहल पहाड़ियाँ झारखण्ड में छोटा नागपुर पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित हैं जिसका निर्माण जुरासिक युग में होने वाले ज्वालामुखी उद्‌गार के फलस्वरूप हुआ था। राजमहल पहाड़ियों पर एवं इसके दामिन-ए-कोह क्षेत्र में माल पहाड़ियाँ एवं संथाली जनजातियों के लोग मुख्य रूप से वास करते है। यह पूरा क्षेत्र संथाल परगना क्षेत्र कहलाता है। 1855 के महान संताल हूल के बाद 1856 में संताल परगना को भागलपुर और बीरभूम जिलों से अलग कर बनाया गया था। संथाल परगना सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मौद्रिकता के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है। प्रशासनिक एवं न्यायिक रूप से यह झारखण्ड राज्य का प्रमुख प्रमण्डल है जिसमें साहेबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका, देवघर एवं जामताड़ा जिले आते हैं। संथाल परगना प्रमंडल का मुख्यालय दुमका में है जो झारखण्ड राज्य की उपराजधानी भी है। दुमका शब्द की उत्पत्ति दामिन-ए-कोह (अर्थात : पहाड़ का आंचल / Skirt of Hills) शब्द से माना जाता है। दुमका जिला दुमका, गोपीकांदर, जामा, जरमुंडी, काठिकुण्ड, मसलिया, रामगढ़, रानेश्वर, शिकारीपाड़ा और सरैयाहाट नामक प्रखण्डों से मिलकर बना है।

संथाल परगना में दामिन-ए-कोह नामक रेखा से परिभाषित क्षेत्र संविधान की पाँचवी अनुसूची के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति क्षेत्र घोषित है। ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) संविधान का सम्मान करती है और उसमें उल्लिखित अनुच्छेदों, प्रावधानों, आदि का विधिवत पालन करती है और राष्ट्र की ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति में सशक्त योगदान देने के लिए नित्य निष्ठावान रूप से समर्पित है।

ईसीएल संथाल परगना के गोड्डा, पाकुड़ एवं देवघर जिले में ऊर्जा का प्रारंभिक स्रोत कोयला के उत्खनन कार्य में पूर्ण निष्ठा के साथ श्रमरत है। सदियों से उपेक्षित गोड्डा क्षेत्र राजमहल परियोजना के प्रारंभ होने से तेजी से विकसित हुई है और अब इसमें हुर्रा सी परियोजना चार चाँद लगा रही है। यह क्षेत्र प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से नियोजन/रोजगार का केंद्र बन गया है। रूपये (₹) के विनिमयन से क्षेत्र के लोग संपन्न हुए हैं। समीपवर्ती क्षेत्रों का सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण करने से ईसीएल की उपस्थिति की महत्ता का पता चलता है। देवघर के विकास में संथाल परगना माइन्स और पाकुड़ जिले के विकास में शिम्लोंग परियोजना अहम योगदान दे रही है। जल्द ही, पाकुड़ के विकास में चुपरभीटा परियोजना की गिनती भी अग्रणीय रूप से होने लगेगी।

वर्तमान में, ईसीएल दुमका जिले में अपने तीन बहुप्रतिष्ठित ब्राह्मणी-चिरचोरपास्टिमल ब्लॉक (800 मि.टन कोयला रिजर्व), अमरकोंडा मुर्गादंगल ब्लॉक (95 मि.टन कोयला रिजर्व) एवं क्यादा चौधर गरियापानी ब्लॉक (73 मि.टन कोयला रिजर्व) में खनन कार्य करने जा रही है।

ईसीएल की कार्यप्रणाली स्पष्ट, न्यायपूर्ण एवं पारदर्शी होती है। कंपनी कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन व विकास) अधिनियम, 1957 में उल्लिखित प्रावधानों के तहत भूमि का अधिग्रहण चरणबद्ध तरीके से विधिवत करती है। भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुर्नव्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (आरएफसीटीएलएआरआर अधिनियम) तथा कोल इंडिया लि. की पुनर्वासन व पुर्नव्यवस्थापन नीति के तहत राज्य/जिला प्राधिकरण के सहयोग से समस्त भूदाताओं एवं परियोजना प्रभावित परिवारों को विश्वास में लेते हुए उन्हें उचित प्रतिकर और पुनर्वासन व पुर्नव्यवस्थापन हितलाभ मुहैया करवाती है जिसमें परियोजना प्रभावित अधिसूचित क्षेत्रों की सामाजिक, सांस्कृतिक, पारंपरिक एवं भौगोलिक स्वरूप बरकार रखने का यथासंभव प्रयास किया जाता है। भारतीय संविधान की पाँचवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रावधानों के तहत परियोजन प्रभावित परिवारों को अधिसूचित क्षेत्र में ही बसाया जाता है। पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम, 1996 के लागू होने के पूर्व से ही ईसीएल द्वारा इस अधिनियम की धारा 4(झ) का पालन किया जाता रहा है जिसके तहत परियोजना प्रभावित ग्रामों के पुनर्वासन व पुर्नव्यवस्थापन के निमित्त बराबर जनप्रतिनिधियों, राज्य/जिला

प्राधिकरण, ग्राम प्रधान एवं परिवारों के साथ ग्राम-सभा, समन्वयन बैठक, चर्चा-परिचर्चा कर सभी को विश्वास में लेते हुए कंपनी नियमानुसार पुनर्वासन व पुर्नव्यवस्थापन कार्य करती है।

वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 ; पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 ; जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम एवं वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 के अंतर्गत खनन परियोजना को सुचारू रूप से परिचालन के लिए आवश्यक संस्वीकृतियाँ प्राप्त की जाती है। वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा झारखण्ड प्रदूषण (नियंत्रण) पार्षद द्वारा निर्गत समस्त आदेशों का अनुपालन किया जाता है। सीएमपीडीआईएल, आसनसोल द्वारा प्रत्येक पखवाड़ा में अर्थात महीने में दो बार जल, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण की जाँच की जाती है। जाँच प्रतिवेदन के अनुसार सुधारात्मक कार्रवाई की जाती है।

जल प्रशोधन संयंत्र (Water Treatment Plant) की अधिस्थापना की जाती है, जिसमें खदान के जल का शोधन कर घरेलू उपयोग हेतु आस-पास के क्षेत्रों में जल उपलब्ध कराया जाता है तथा खदान से निष्कासित जल का अधःसाद टंकी (Settling Tank) से शोधन कर औद्योगिक गतिविधियों, धूल-शमन हेतु जल छिड़काव, एवं अग्नि शमन के कार्य में उपयोग किया जाता है।

ईसीएल खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा विनिर्दिष्ट मानदंडों का सख्ती से पालन करते हुए खनन परियोजनाओं का परिचालन करती है जिसका समय-समय पर इनके प्राधिकारियों द्वारा निरीक्षण भी किया जाता है। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय मानकों (ISO:9001, ISO:14000 एवं OHSAS:18000) का अनुपालन करते हुए ईसीएल, पर्यावरण एवं सुरक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को नित्य सुदृढ़ करती रहती है। खननोपरांत माइन क्लोजर अधिनियम के दिशानिर्देशानुसार खनन परियोजनाओं की भूतात्विक सीमा के अंदर खनित भूमि में तकनीकी व जैविक पुनरूद्धारण (Technical and biological Reclamation) का कार्य पूर्णतः संपन्न किया जाता है। ईसीएल केंद्रीय व राज्य सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट नियमावलियों व आदेशों के अनुसार समस्त अधिगृहीत भूमि का वैधानिक रूप से उपयोग किया जाता है।

खनन परियोजना से उपगत आय को राजस्व के रूप में ईसीएल राष्ट्र (भारत एवं इसके संबद्ध राज्यों) के विकास एवं समृद्धि के लिए समर्पित कर देती है। साथ ही, खनन से प्रभावित क्षेत्रों एवं वहाँ वास कर रहे व्यक्तियों के कल्याण व हितलाभ हेतु गठित जिला खनिज फाउंडेसन ट्रस्ट (DMFT) में ईसीएल नियमित नियमानुसार धनराशि जमा करती रहती है। इस धनराशि का उपयोग झारखण्ड राज्य सरकार द्वारा गठित प्रबंधकीय समिति (Managing Committee) द्वारा वार्षिक कार्य योजना तैयार कर निम्नलिखित रूप से की जाती है।

(क) सामाजिक व आर्थिक सोद्देश्य पूर्ति हेतु स्थानीय आधारभूत संरचनाओं का निर्माण।

(ख) खनन प्रभावित क्षेत्रों के लोक कल्याण हेतु सामुदायिक परिसंपत्तियों (Community assets) का अधिस्थापना एवं आवश्यक सेवाओं को प्रदान करना, इनका अनुरक्षण (रखरखाव) तथा सतत अभ्युत्थान (Upgradation) करना।

(ग) रोजगार तथा स्वरोजगार क्षमता-सर्जन (Capacity building) हेतु कौशल विकास कार्यक्रमों का सुनियोजित तरीके से आयोजन व प्रबंधन करना है।

इससे भी आगे, ईसीएल झारखण्ड राज्य के संथाल परगना के आंतरिक इलाके में अपने निगमित सामाजिक दायित्व (CSR) के अंतर्गत आधारभूत अवसंरचना विकास परियोजनाओं, परियोजना प्रभावित युवाओं में कौशल विकास, नारी सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवा प्रसुविधाएँ, जलापूर्ति इत्यादि में अंतर्ग्रस्त है। ईसीएल नित्य मेडिकल कैम्प एवं मोबाइल मेडिकल वैन के माध्यम से घर पर ही चिकित्सा-परामर्श, दवाइयाँ, पैथोलॉजी जाँच, रोगों के बारे में जागरूकता सहित बुनियादी चिकित्सा प्रसुविधाएँ मुफ्त उपलब्ध करवाती रहती है।

सीआईएल एवं इसकी अनुषंगी कंपनी ईसीएल पर संथाल परगना के जनसमुदायों ने हमेशा विश्वास जताया है। इसके लिए सीआईएल एवं ईसीएल सदैव उनका आभारी रही है। इसी तरह, आगे भी सीआईएल एवं ईसीएल अपने कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक पालन करती रहेगी। सदियों से, संथाल परगना का राष्ट्र की प्रगति में सराहनीय योगदान रहा है। धन्यवाद ! बहुत धन्यवाद! संथाल परगना के जनजीवन में समृद्धि से झारखण्ड राज्य का स्वर्णिम अध्याय का शुभारंभ हो रहा है।

(नीलाद्री रॉय)
निदेशक (तकनीकी) संचालन, ईसीएल

संपादकीय...

प्रिय सुधि पाठकगण,

विशाल जनशक्ति वाली कंपनी ईसीएल के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका "ज्योत्स्ना" ईसीएल में कार्यरत कर्मियों के लेखन क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है, साथ ही राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 का सतत अनुपालन करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रति एक समन्वित सोच विकसित करने का निरंतर प्रयास कर रहा है।

प्रथम दृष्टतया पत्रिका का मुख्य पृष्ठ भारतीय संस्कृति की एक झलक प्रस्तुत करती है जिसमें चित्रित वीणा, हंस एवं माँ वागेश्वरी मुख्य पृष्ठ का दर्शन करने वालों के मानस में अध्ययन- अध्यापन का भाव उत्पन्न करते हैं और पाठकों को स्वाध्याय की ओर उन्मुख करती है। मानव जीवन में स्वाध्याय की श्रेष्ठता को न केवल भारतीय दर्शन ने वरन प्रत्येक सभ्यता-संस्कृति ने माना है और अपनाया भी है।

पत्रिका में निदेशक मंडल द्वारा जारी संदेश समस्त खनन कर्मियों के साथ-साथ पत्रिका पढ़ने वाले पाठकों को ईसीएल संबंधी काफी महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराते हैं। तकनीकी लेख के खंड में "COALRR" साफ्टवेयर से अवगत कराया गया है जो भूमि अधिग्रगण, पुनर्वासन, पुनर्व्यवस्थापन, भूमि संबंधी आदि अनेकानेक जानकारी सहज प्राप्त करने के तरीकों पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। पत्रिका को पूर्णता प्रदान करने में ईसीएल अधिकारियों और कर्मियों का योगदान सर्वथा सराहनीय रहा है।

पाठकों के समक्ष हिन्दी पत्रिका "ज्योत्स्ना" का 21वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। पुस्तक धरोहर होती है जो समाज, संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन, लोगों की विचारधारा की छवि प्रस्तुत करती है और इन सबों से हमें अवगत करा कर हमारी सोच एवं दृष्टिकोण को एक दिशा प्रदान करती है।

जय हिन्द जय भारत।

सुमेधा भारती
संपादक, 'ज्योत्स्ना' पत्रिका
राजभाषा विभाग

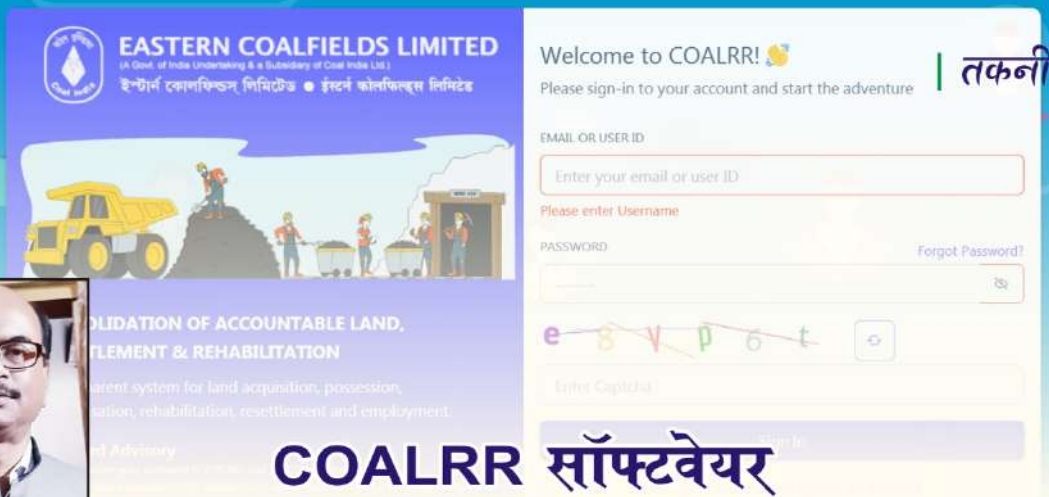

COALRR सॉफ्टवेयर

(भूमि, पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन का उत्तरदायी समेकन)
इसके विकास और कार्यान्वयन की कहानी

पृष्ठभूमि :

1. कोयला खनन के लिए भूमि, विशेषकर खुली खदान विधि से खनन में, प्राथमिक संसाधन है। वर्ष 1973 में खदानों के राष्ट्रीयकरण के दौरान ईसीएल को पूर्ववर्ती खानों से लगभग 8707 हेक्टेयर भूमि विरासत में मिली। कंपनी के पास अपनी स्थापना के बाद से अपनी खानों के लिए भारी मात्रा में भूमि अधिग्रहण करने की विरासत है। इस समय, ईसीएल के पास लगभग 26,963 हेक्टेयर भूमि है, जिसमें से लगभग 23,339 हेक्टेयर भूमि पर दखल दियानी प्राप्त किया है और कंपनी हर साल अपनी भूमि सूची में लगातार वृद्धि कर रही है।
2. भूमि अधिग्रहण अधिनियम ; कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन एवं विकास) अधिनियम 1957; भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (आरएफसीटीएलएआरआर अधिनियम); वन संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत वन भूमि का अपवर्तन ; सरकारी भूमियों के लिए राज्य सरकारों के साथ पट्टा अथवा दीर्घावधि बंदोबस्त ; बिक्री विलेखों के पंजीकरण के माध्यम से भूमि की सीधी खरीद आदि जैसे विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत भूमि का अधिग्रहण किया गया है। विभिन्न अधिनियमों और तरीकों के तहत भूमि अधिग्रहण की प्रक्रियाएं पूरी तरह से अलग हैं।
3. भूमि पर दखल दियानी लेने के लिए, ईसीएल को संबंधित अधिग्रहण अधिनियम के प्रावधानों और कोल इंडिया लिमिटेड की प्रचलित पुनर्वासन एवं पुनर्व्यस्थापन नीति के अनुसार 'इच्छुक व्यक्तियों' को मुआवजे का भुगतान करना होगा और/या हितलाभ प्रदान करना होगा। अर्हक भूमि प्रदाता या उनके द्वारा नामित व्यक्ति को नियोजन प्रदान करना प्रमुख पुनर्वासन एवं पुनर्व्यस्थापन हितलाभों में से एक है तथा इसका निपटान ईसीएल द्वारा उक्त पुनर्वासन एवं पुनर्व्यस्थापन नीति के प्रावधानों और कंपनी के संबंधित मानदंडों का पालन करते हुए किया जाता है।
4. अतएव, भूमि के अधिग्रहण/दखल दियानी के संबंध में ऐतिहासिक आँकड़ों के उचित रखरखाव, भुगतान किए गए मुआवजे के रिकॉर्ड और अधिगृहीत भूमि पर दखल दियानी के एवज में प्रदत्त नियोजन की गंभीर मांग है। ईसीएल द्वारा दखल दियानी प्राप्त विभिन्न प्रकार की भूमि के चित्रमय निरूपण ; अधिकारियों की सहायता, जिन्हें ग्रीनफील्ड या ब्राउनफील्ड परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण करने का काम सौंपा गया है ; विषय क्षेत्र में गत अधिग्रहणों के बारे में पर्याप्त वास्तविक सामयिक संसूचनाओं की उपलब्धता प्रदान, और भूमि अधिग्रहण/दखल दियानी के विभिन्न प्रस्तावों को संसाधित, मुआवजा या रोजगार प्रदान करने के लिए ऑनलाइन इंटरएक्टिव प्लेटफॉर्म स्थापित करने की नितांत आवश्यकता है।

COALRR की यात्रा :

1. ईसीएल में भूमि अभिलेखों को डिजिटाइज करने की त्वरित यात्रा जनवरी 2019 में शुरू हुई जब सीवीओ, ईसीएल ने कुछ निर्दिष्ट विशेषताओं के साथ एक गतिशील डेटाबेस लॉन्च करने की सिफारिश की।

2. पर्याप्त विभागीय बुनियादी ढांचे और सीमित क्षमता की अनुपलब्धता के कारण, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के तहत केंद्र सरकार के गैर-लाभकारी संगठन, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) के सहयोग से परियोजना के साथ आगे बढ़ने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, मार्च 2022 में एनआईसी, कोलकाता को कार्य आदेश जारी किया गया।
3. 'COALRR', जिसे ईसीएल के भू-राजस्व व संपदा (एलआरई) विभाग द्वारा संकल्पित किया गया है और एनआईसी, कोलकाता द्वारा एनआईसी, चेन्नई और एनआईएसआई, दिल्ली के साथ विकास और कार्यान्वयन के लिए स्वीकार किया गया है जो उपर्युक्त सभी आवश्यकताओं और उद्देश्यों को पूरा करेगा। यह एक स्वप्निल परियोजना थी जो अब मूर्त रूप ले रही है। यह पूरे देश में अपनी तरह का पहला प्रयास है।

सॉफ्टवेयर का मूल उद्देश्य और संरचना :

1. डेटाबेस वेब-आधारित और पासवर्ड से सुरक्षित होगा। प्रत्येक उपयोगकर्ता के पास एक पासवर्ड होगा और उपयोगकर्ता की क्षमता के आधार पर डेटाबेस के विभिन्न अनुभागों तक पहुँच की अनुमति प्रतिबंधित होगी।
2. डेटाबेस को भूमि अधिग्रहण/दखल दियानी/मुआवजे का भुगतान/नियोजन प्रदान करने आदि के लिए वर्तमान रिकॉर्डिंग प्रणाली के अनुरूप उचित रूप से संरचित किया जाएगा।
3. बाद के चरण में सिस्टम सुधार के लिए किसी भी बदलाव को समायोजित करने के लिए आँकड़ों की संरचना में संशोधन की गुंजाइश होगी।
4. यह भूमि अधिग्रहण के नए प्रस्ताव के बारे में निर्णय लेते समय तुलना के लिए उपर्युक्त मामलों से संबंधित सभी ऐतिहासिक आँकड़ों और सूचनाओं को उपयुक्त संरचना में स्वीकृत और संग्रहित करेगा।
5. यह उसी या पड़ोसी खान/क्षेत्र द्वारा प्रतिलिपि प्रविष्टि को सत्यापित करने के लिए दर्ज किए गए आँकड़ों/अभिलेखों को मान्य करेगा, किसी विशेष भूखंड के लिए भूमि की कुल अधिग्रहित/दखल दियानी प्राप्त वाले परिमाण के संबंध में गलत प्रविष्टि भूखंड के कुल क्षेत्रफल और अन्य सत्यापन नियम/मानदंड से अधिक नहीं है जिसे बाद में नियत समय में परिभाषित किया जाएगा।
6. यह निम्नलिखित के लिए इनपुट मॉड्यूल प्रदान करेगा -
   अ. विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से भूमि का नया अधिग्रहण ;
   आ. विभिन्न तरीकों के तहत अधिगृहीत भूमि पर दखल दियानी प्राप्त करना ;
   इ. भूमि, घरों / अन्य संरचनाओं के लिए मुआवजे का भुगतान प्लॉटों, नियोजन आदि जैसे अन्य पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन लाभों के एवज में क्षतिपूर्ति, पुनर्वास स्थलों के विकास के लिए संव्यय आदि भी सम्मिलित हैं ;
   ई. सरकारी देयताओं यथा अनिवार्य भाटक (डेड रेंट), सतही किराया (सर्फेस रेंट), भू-राजस्व, पंजीकरण की लागत और नामांतरण (म्यूटेशन) आदि का भुगतान ;
   उ. परियोजना प्रभावित परिवारों (पीएएफ) के पुनर्वासन और गांवों के पुनर्व्यवस्थापन के संबंध में संसूचनाएँ ;
   ऊ. भूदाताओं, नामिती, प्रस्तावित भूखंडों, भूखंड-वार परिमाण, भूदाता के साथ नामिती के संबंध एवं अन्य प्रासंगिक ब्यौरों के सभी विवरणों के साथ नियोजन प्रस्तावों को संसाधित करना तथा नियोजन का अनुमोदन।
7. यह एक ग्राफिकल इंटरफेस प्रदान करेगा जो मौजा और उसमें भूखंडों को दिखाएगा। कर्सर पर क्लिक करके/ले जाकर किसी विशेष भूखंड का चयन करने पर, अधिगृहीत और दखल दियानी प्राप्त भूमि के परिमाण, भूदाताओं के नाम, भूदाता और ईसीएल के स्वामित्व का संदर्भ, मुआवजे की राशि और प्रदत्त नियोजन की संख्या आदि के बारे में संरक्षित मेटाडेटा प्रदान करेगा।
8. इससे भूमि के दोहरे अधिग्रहण/दखल दियानी, अन्य पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन हितलाभों के कारण सरकारी

बकाया/मुआवजे/भत्तों के दोहरे भुगतान या भूमि के एक ही टुकड़े पर भूदाताओं/मकान मालिकों को नियोजन की दोहरी पेशकश (किसी भूखंड के लिए उपलब्ध खतियान-वार शेष भूमि का बही-खाता तैयार करके और किसी विशेष नियोजन प्रस्ताव में प्रस्तावित भूखंड क्षेत्र के साथ इसकी तुलना करके) को प्रतिबंधित करने के लिए नए सिरे से दर्ज किए गए आंकड़ों और सूचनाओं के साथ ऐतिहासिक डेटा की तुलना करने में सक्षम होगा।

9. यह आवश्यक आउटपुट जानकारी प्रदान करने के लिए ठीक से संरचित/अनुकूलित दृश्य प्रदान करेगा। इस खंड तक पहुँच की अनुमति प्रतिबंधित होगी और उपयोगकर्ता की क्षमता पर निर्भर करेगी।
10. यह उचित रूप से संरचित/अनुकूलित मासिक रिपोर्ट और अन्य प्रकार की रिपोर्ट यथा आवश्यक हो तैयार करने में सक्षम होगा। इस खंड तक पहुँच की अनुमति प्रतिबंधित होगी और उपयोगकर्ता की क्षमता पर निर्भर करेगी।

अपेक्षित हितलाभ :

1. क्लाउड में परियोजना प्रभावित परिवारों (पीएएफ) से प्राप्त भूमि अधिग्रहण, दखल दियानी, मुआवजे का भुगतान, पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन हितलाभों से संबंधित आँकड़े और सूचनाएँ संगृहीत करना जिसे आवश्यकता पड़ने पर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।
2. भौतिक दस्तावेजों को डिजीटल रूप में सहेजना जिसे क्षत-विक्षत या नष्ट नहीं किया जाएगा।
3. सभी हितधारकों द्वारा आँकड़ों तक वैश्विक पहुँच
4. कागजी कार्रवाई, फोटोकॉपी आदि में कमी।
5. भूमि से संबंधित मामलों के बारे में वास्तविक समय की सूचना प्रदान करना जिसका उपयोग योजनाकारों और निर्णय निर्माताओं द्वारा ग्रीनफील्ड / ब्राउनफील्ड परियोजनाओं के लिए योजनाएं तैयार करते समय किया जा सकता है।
6. समय की जरूरतों को पूरा करने के लिए मानक और अनुकूलन योग्य रिपोर्ट तैयार करना।
7. एक ही भूमि के दोहरे अधिग्रहण की संभावना को समाप्त करना।
8. मुआवजे के दोहरे भुगतान, पुनर्वासन व पुनर्व्यवस्थापन हितलाभ, एक ही भूमि पर कई नियोजन प्रदान करने के अवसर को समाप्त करना।
9. प्रक्रियाओं और रूपों का मानकीकरण।
10. विभिन्न प्रस्तावों को संसाधित करने के लिए अधिकारियों को मार्गदर्शन जो प्रस्तावों के पीछे की आवाजाही को कम करेगा।
11. अधिकारियों की स्पष्ट भूमिका की सुपुर्दगी।
12. प्रक्रियाओं में अधिक पारदर्शिता जो भूदाताओं और पुनर्वासित परिवारों के बीच चिंता और शिकायतों को कम करेगी।
13. कैप्चर किए गए दस्तावेजों का उपयोग भूदाताओं और पुनर्वासित परिवारों की शिकायतों के निवारण के लिए किया जा सकता है और इसका उपयोग कानून की अदालतों में मुकदमों को निपटाने के लिए भी किया जा सकता है।

ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री समीरन दत्ता के कर-कमलों से 19 जनवरी, 2024 को कंपनी में भूमि, पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन का उत्तरदायी समेकन के लिए COALRR सॉफ्टवेयर का लोकार्पण किया गया है।

पार्थ सखा डे
महाप्रबंधक (भू-राजस्व व संपदा)
ईसीएल मुख्यालय

अदालत में भारतीय भाषाएँ

हिन्दी को अदालत की भाषा बनाए जाने का प्रस्ताव 1958 में ही विधि आयोग अपने चौदहवीं रिपोर्ट में कर चुका है। मगर इस अनुशंसा के इतने वर्षों बाद भी सर्वोच्च न्यायालय/उच्च न्यायालयों की भाषा हिन्दी नहीं बन सकी है। यदि केंद्र की भाषा हिन्दी है जैसा कि हमारा संविधान कहता है उसके आलोक में यह जरूरी है कि उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही का माध्यम भी हिन्दी हो।

1950 में राजस्थान के उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग अधिकृत हुआ। 1970 में उत्तरप्रदेश, 1971 में मध्यप्रदेश और 1972 में बिहार के उच्च न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग भी अधिकृत हुआ। इन चार उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं का प्रयोग अधिकृत है। इन चार उच्च न्यायालयों को छोड़कर देश के शेष 21 उच्च न्यायालयों और सुप्रीम कोर्ट में सभी कार्यवाहियों में अंग्रेजी अनिवार्य है।

विश्व के इस सबसे बड़े प्रजातन्त्र में आजादी के 77 वर्षों के बाद भी सुप्रीम कोर्ट और देश के 25 में से 21 उच्च न्यायालयों की किसी भी कार्यवाही में भारत की किसी भी भाषा का प्रयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है। अगर इन चार उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने में भारत की भाषाई विविधता कोई समस्या नहीं है तो शेष 21 उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाने में भारत की भाषाई विविधता कोई समस्या कैसे हो सकती है? गौरतलब है कि संविधान के अनुच्छेद 348 के खंड-2 के तहत किसी उच्च न्यायालय में हिन्दी एवं संबन्धित क्षेत्रीय भाषा को बराबरी का दर्जा दिया गया है। इसके तहत तमिलनाडु के उच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम से कम तमिल, कर्नाटक उच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम से कम कन्नड, पश्चिम बंगाल के उच्च न्यायालय में बांग्ला, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड और झारखंड के उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी के अलावे कम से कम हिन्दी और इसी तरह अन्य प्रांतों के उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी के अलावा कम से कम उस प्रांत की राजभाषा को प्राधिकृत किया जाना चाहिए और सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम से कम हिन्दी को प्राधिकृत किया जाना चाहिए।

केवल हिन्दी भाषी राज्यों (बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान) के उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषा के प्रयोग की अनुमति होना, हिंदीतर भाषी प्रान्तों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार प्रतीत होता है। हिन्दी भाषी राज्यों में भी छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड एवं झारखंड के उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नहीं है। ध्यातव्य है कि छत्तीसगढ़, उत्तराखंड एवं झारखंड के निवासियों को इन राज्यों के बनने से पहले अपने-अपने उच्च न्यायलयों में हिन्दी का प्रयोग करने की अनुमति थी।

देश के जिला न्यायलयों तक सम्बद्ध राज्य की राजभाषा का प्रयोग अधिकृत है। जब किसी मुकदमें में जिला न्यायालय के बाद हाइ कोर्ट में अपील की जाती है, तो जिन 21 उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी की अनिवार्यता है, उनमें अपील दायर करने के लिए मुकदमें से संबन्धित सारे दस्तावेज का प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेजी में कराने में समय और धन की बर्बादी होती है। ऐसे ही जिन 4 उच्च न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग अधिकृत है, उनसे सम्बद्ध फैसले पर जब उच्चतम न्यायालय में अपील दायर की जाती है, तब भी मुकदमें से संबन्धित सारे दस्तावेज का प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेजी में कराने में समय और धन की बर्बादी होती है।

जिला न्यायालय में जो वकील किसी मुकदमें में काम करता है, आमतौर पर उसे मुकदमें के बारे में सारे तथ्य ज्ञात होते हैं। परंतु अंग्रेजी अनिवार्यता के कारण उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय में अंग्रेजी में पारंगत नया वकील रखना पड़ता है तो नए सिरे से मोटी फीस वकील को देनी पड़ती है।

भारत को जीतकर इसे गुलाम बनाने वाले विदेशी मुस्लिम शासकों ने बिना किसी हिचक के हजारों वर्षों से भारत में प्रयुक्त हो रही राजभाषाओं को हटाकर फारसी भाषा को यहाँ की राजभाषा बना दिया। जबकि पूर्व में भारत की जनता का फारसी भाषा से कोई खास ताल्लुक नहीं था।

जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत को गुलाम बनाया तो लगभग छह सौ वर्षों तक राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई जा रही भाषा फारसी को हटाकर अंग्रेजी को भारत की राजभाषा बना दिया। जबकि पूर्व में भारत की जनता का अंग्रेजी भाषा से कोई खास ताल्लुक नहीं था। परिणामस्वरूप सरकारी नौकरी पाने की चाहत वालों ने अंग्रेजी सीखी और कुछ ही वर्षों में अंग्रेजी भाषा भारत में न्यायालयों, शिक्षा और प्रशासन की भाषा भी बन गई और अंग्रेजी जानना श्रेष्ठता का सूचक बन गया। लेकिन हम देश की आजादी मिलने के 77 वर्षों बाद भी भारत में अंग्रेजों द्वारा प्रयुक्त राजभाषा अंग्रेजी को हटाकर भारत की जनभाषाओं को न्यायालय की भाषा का दर्जा नहीं दे सके। जबकि भारत के जनगणना आयोग के आंकड़ों के अनुसार भी अंग्रेजी जानने वालों की संख्या भारत में एक प्रतिशत से भी कम है।

नेपाल के उच्चतम न्यायालय सहित सारे न्यायालयों की सारी कार्यवाहियाँ नेपाली भाषा में होती है। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायलय और उच्च न्यायालयों सहित सारे न्यायालयों की सभी कार्यवाहियों में उर्दू भाषा का प्रयोग करने की सुविधा है। हालांकि अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी यहाँ निषिद्ध नहीं है। परंतु उर्दू का दर्जा किसी भी रूप में अंग्रेजी से नीचे नहीं है। अर्थात कोई व्यक्ति पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय सहित किसी भी न्यायालय में अगर उर्दू भाषा में मुकदमा दायर करता है तो मुकदमों से संबन्धित बहस उर्दू भाषा में होगी और न्यायाधीश अपना निर्णय भी उर्दू में ही लिखेंगे।

अगर हमारे देश के उच्चतम न्यायालय में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी भाषा का विकल्प प्रारम्भ होगा तब भी न्याय व्यवस्था जन आकांक्षामुखी/ज्यादा कारगर हो सकती है। अगर भारत के संसद की कार्यवाही बाईस भारतीय भाषाओं में संभव है, अगर सयुंक्त राष्ट्र संघ में (अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चाइनीज, रूसी और अरबी) छह आधिकारिक भाषाओं में कामकाज हो सकता है। पचास करोड़ की आबादी वाले यूरोपियन यूनियन में 24 भाषाओं में काम होता है तो न्याय की भाषा के रूप में हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के साथ विकल्प देने का प्रयोग संभव क्यों नहीं हो सकता?

आज फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, इस्राइल, स्पेन, रूस, चीन, जापान, ताइवान, कोरिया सहित विश्व में ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसने देश के अंदर न्यायालय, शिक्षा, प्रशासन आदि में किसी विदेशी भाषा का इस्तेमाल कर के प्रगति हासिल किया हो। देश के अंदरूनी कार्यों में अंग्रेजी का इस्तेमाल करने वाले चंद देश इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और आंशिक तौर पर कनाडा भी ऐसे ही देश हैं, जिनकी जनभाषा अंग्रेजी है। क्या विज्ञान की पढ़ाई केवल अंग्रेजी में ही हो सकती है? क्या इंग्लैंड, यू. एस.ए., ऑस्ट्रेलिया और कनाडा के बाहर के लोग विज्ञान की पढ़ाई नहीं करते? क्या इन चार मुल्कों को छोड़कर बाकी दुनिया असभ्य है?

पुराने जमाने में इंग्लैंड देश में भी बाइबिल केवल लैटिन भाषा में ही था, अंग्रेजी में नहीं था। उन दिनों इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च का बोलबाला था। रोमन कैथोलिक चर्च इस बात का समर्थक था कि बाइबिल सहित धर्म संबंधी सारे आलेख केवल लैटिन भाषा में उपलब्ध होने चाहिए। जिसकी समझ और व्यख्या करने का अधिकार केवल पादरियों के पास होना चाहिए। इंग्लैंड में बाइबिल सहित अन्य धार्मिक आलेखों का लैटिन से अंग्रेजी में अनुवाद के समर्थक लोग समाज पर रोमन कैथोलिक चर्च के प्रभुत्व के खिलाफ थे और वे लैटिन के प्रभुत्व के स्थान पर जनभाषा अंग्रेजी और जन अधिकारों के समर्थक थे। बाइबिल सहित अन्य धार्मिक आलेखों का लैटिन से अंग्रेजी में अनुवाद के पीछे मुख्य रूप से यह तर्क था कि किसी भी मनुष्य के लिए भगवान (सत्ता) से जुड़ने के लिए पादरियों की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए ; उन्हें भगवान से क्षमा और मुक्ति के लिए स्वयं प्रार्थना करने का हक होना चाहिए ; बाद में जनाधिकारों और जन स्वतंत्रता के समर्थक लोगों के दबाव में बाइबिल अंग्रेजी में अनुवाद के रूप मे उपलब्ध हुआ। आज अंग्रेजी भाषा भारतीय उच्चतम न्यायालय व अधिकांश उच्च न्यायालयों में लैटिन भाषा की भूमिका में है। न्याय के मंदिर में भाषा के अंग्रेजी होने से करोड़ों गरीब, निरक्षर भारतीय भाषियों के लिए अदालतीय कार्यवाही एक अबूझ पहेली की तरह हो जाती है।

राजेन्द्र राम
सहायक प्रबंधक (कार्मिक)
पी.आर.एम.बी. प्रकोष्ठ
ई.सी.एल. मुख्यालय

बदला

गोपालदा को एक नाम से जाना जाता है। ऐसे महान तांत्रिक बहुत कम होते हैं। एक दिन मैं अपनी निजी समस्याओं के लिए गोपालदा के पास गया था। तब मैंने गोपालदा को एक पति-पत्नी के कुष्ठ रोग का न्याय करते देखा। करीब पंद्रह-बीस मिनट के बाद गोपालदा ने गंभीर चेहरे से उनकी ओर देखा और कहा, ''नहीं, करने को कुछ नहीं है, यह बदला लेने के लिए आया है। आपने बहुत बड़ा अन्याय किया है। यह परिणाम है, आप जानते हैं कि आपने क्या किया है। आपका बेटा सभी बकाया का भुगतान करेगा और आपको छोड़ देगा। इसका कोई उपाय नहीं है और देखें कि आपने क्या किया है।

सुदीन ने गोपालदा के पैरों को गले लगा लिया और रोते हुए कहा, ''हां, मैंने गलत किया है। हमारे इकलौते बेटे को बचा लो, तुम मुझसे जो भी करने को कहो, मैं कुछ भी करने को तैयार हूं। गोपालदा ने पूछा, ''मुझे बताओ कि तुमने क्या किया।

सुदीन कहने लगा कि मेरा एक दोस्त सरकारी ऑफिस में काम करता था, उसका नाम शंकर था, मेरी दुकान से सामान लेता था उसका कोई नहीं था। वह खुद ही खाना बनाता था। वह अपने खाली समय में मेरे दुकान पर आता था और चैट करता था। एक दिन मैंने उनसे कहा कि अगर मुझे कुछ पैसे मिल जाएं तो मैं दुकान को बड़ा कर सकता हूं। शंकर ने पूछा कितना रूपए चाहिए। मैंने कहा कि पांच लाख रुपये होना बेहतर होगा। शंकर मुझे पैसे उधार देने के लिए तैयार हो गया और अगले दिन उसने मुझे 5 लाख रुपये का चेक दिया और पैसे मिलने के बाद, मैंने दुकान का विस्तार किया। शंकर को कोरोना हो गया, बगल के घर के एक व्यक्ति ने शंकर को अस्पताल में भर्ती कराया। शंकर ने अस्पताल से बार-बार फोन किया लेकिन मैंने उसका फोन नहीं उठाया। अस्पताल में मेरा नाम और फोन नंबर उनके रिश्तेदार के रूप में लिखा गया था। एक दिन, मुझे अस्पताल से फोन आया कि शंकर की मृत्यु हो गई है और वह उसका शव ले जाय। मैं उसका शव लेने नहीं गया। सरकार द्वारा उनके शव का अंतिम संस्कार किया गया।

2021 में कोरोना बहुत कम हो गया है। धीरे-धीरे चीजें सामान्य हो रही हैं, मैंने रूमा से शादी की, फिर 15 अप्रैल, 2022 को हमारे बेटे का जन्म हुआ, हमने 25 अक्टूबर को उसका नाम शांति रखा। जनवरी 2023 से, हमारा बेटा बीमार है। मैंने कई डॉक्टरों को दिखाया जो कुछ नहीं कर पा रहे थे। मैं वेल्लोर गया और इलाज कराया, वे कोई उम्मीद नहीं दे सके और शांति दिन-ब-दिन कमजोर होता जा रहा था। सभी ने मुझे कहा कि आप धन्वंतरी हैं, आप मेरे बेटे को बचाएं, मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ। आप हमारे जीवन में स्वस्थ शांति बहाल करें।

गोपालदा ने उसके सिर पर हाथ रखा और कहा कि तुम्हारे मित्र शंकर ने तुम्हारे घर में तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लिया है। बदला लेना और ब्याज सहित अपना बकाया वसूलना। एक दोस्त के रूप में, आपने वह नहीं किया जो आपको करना चाहिए था। आज पिता के रूप में आपको शंकर का सारा कर्ज चुकाना है। यह समय का एक चक्र है, केवल तभी जब सभी ऋण ब्याज पर चुकाए जाते हैं। आपका बेटा आपको छोड़ देगा। किसी को कुछ नहीं करना है। पाप कभी दबाया नहीं जाता। हम सभी काल गिरोह के कैदी हैं। भगवान का नाम लें, केवल वही आपको अपके परिवार को शांति दे सकता है।

दिलीप कुमार आचार्य
सेवानिवृत्त कर्मचारी, सोदपुर क्षेत्रीय कार्यालय

छोटी-सी उड़ान

बैंक में घुसते हुए दोला के पैर काँप रहे थे। आज पहली बार वो बैंक में घुसने जा रही थी। भीतर में बैंक के कर्मचारी करीने से बैठे काम कर रहे थे। लोग व्यस्त हो कर यहाँ वहाँ जा रहे थे। दोला सहमी हुई एक किनारे खड़ी हो गई। लगभग आधा घंटा गुजर गया। लेकिन दोला को समझ में नहीं आ रहा था कि किसके पास जाए। एक सामान्य सा दिखने वाला इंसान उसे बहुत देर से देख रहा था। कुछ देर बाद आकर उससे पूछा, मैडम, आप किसी काम से आयीं हैं क्या? ए.सी. में भी दोला का गला सूख रहा था। किसी तरह बोली - "हाँ, मेरे पति मर गए। इसलिए मुझे खाता खुलवाना है।" दोला की बात सुन उसे दोला पर रहम आ गया। दोला को बहीखाता खुलवाने वाले अफसर के पास ले गया। अफसर को दोला ने अपनी स्थिति बताते ही उसने भी दोला को दस्तावेज भरने में बहुत सहायता की। सारा काम होने के बाद उस अफसर ने कहा, "मैडम आप आज जा सकती हैं। कल या परसों आकर खाता ले जाइएगा।"

दोला अवाक् हो गई। इतनी जल्दी उसका खाता खुल गया। कुछ कर पाने का एक अजीब आनंद अनुभव हुआ। शरीर से थकी लेकिन मन में एक ताजगी लिए घर पहुंची। घर का ताला खोल घर में घुसी ओर बिस्तर पर जा बैठी। अपनी पीठ थपथपाने सा मन कर रहा था। आज उसने खुद से कुछ किया था।

दोला बहुत ज्यादा हो तो घर से निकल सामने की दुकान से सब्जी या बनिए के दुकान से एक दो सामान खरीद कर लाती थी। पति सुमंत ही सुबह सारा बाजार कर देता था। सुमंत का अचानक दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई थी। दोला के सभी सगे-संबंधी उसकी सहायता के लिए कूद पड़े थे। दोला भी यंत्र चालित की तरह रिश्तेदारों के कहे हर नियम का पालन करती गई थी। किसी ने सफेद थान ला दिया तो पहन लिया। किसी ने जोर जबरदस्ती कर कुछ खिला दिया तो खा लिया। दोला के सही ढंग से सुध आने से पहले ही तेरहवीं भी गुजर गई। उसे यही विश्वास ही नहीं हो रहा था कि सुमंत उसकी जिन्दगी में नहीं रहा। सारे पारलौकिक काम होने के बाद रिश्तेदार वापस जाते समय दोला को सैंकड़ों सलाह मशविरा देते जा रहे थे। कोई कहता हल्के रंग की साड़ी पहन सकती हो। कोई कहता मांस मछली छोड़ सकती हो। लहसुन प्याज खा लो। कोई कहता एक साल तक शाम को घर से बाहर नहीं निकलना। कोई कहता किसी बाबा से दीक्षा ले कर बाकी जिन्दगी भगवान की सेवा में लगा लो। किसी ने उसके हाथ के लोहे की चूड़ी जिसे बंगाल में नोआ कहते हैं बोले, "ये तो स्वामी जिंदा रहने पर पहनते हैं खोल दो उसे।" किसी ने कहा अपनी रंगीन साड़ियाँ गरीबो में बाँट दो। छोटा भाई बोला, "दीदी, जीजाजी की बाइक पड़ी-पड़ी नष्ट हो जाएगी। मेरा ऑफिस बहुत दूर है। मैं ले जाता हूँ। मुफ्त में नहीं ले रहा हूँ कुछ रुपया दो तीन महीने बाद में दे जाऊंगा। जेठ ने तो यहाँ तक कहा था, "छोटे भाई के प्रति हमारा भी एक कर्तव्य है। हम आपको यहाँ अकेले नहीं छोड़ सकते। यह घर बेच कर उस पैसे से हमारे घर के छत पर एक कमरा बनवा के आपको ले जायेंगे। तब तक आपकी जेठानी रात को आपके साथ रहेंगी।" ननद बोली, "भाभीजी, अकेले नहीं निकलिएगा। लोग निंदा करेंगे। आपको बाजार से कोई सामान चाहिए होगा तो बोलिएगा हम आपके साथ चलेंगे।" सुमंत का एक दोस्त जो सुमंत के बीमा की देख-रेख करता था, ढेर सारे कागज पर दस्तखत करवा कर जाते जाते बोल गया था," आपके पति

मेरे लिए सिर्फ ग्राहक ही नहीं थे, मेरे बहुत अच्छे दोस्त भी थे। मुझपे बहुत भरोसा भी करते थे। अतः आपका भले सोचने का दायित्व भी मेरा है। आपके पति का बैंक और दफ्तर से मिली पूँजी से आपका दैनिक खर्च आराम से चल जायेगा। आप अकेली विधवा महिला, वैसा कुछ ज्यादा पैसा लगने की बात नहीं है। फिर रहेंगी तो जेठ के साथ। बीमा के पैसे को मैंने ठीक किया है, एक दूसरे बीमा नीति में निवेश करूंगा। ताकि आपको बूढ़ापे में काफी पैसे मिले वो कागज भी मैंने आपसे दस्तखत करवा लिया है। दोला को समझ में नही आ रहा था कोई उससे ये नहीं पूछ रहा था कि वो क्या चाहती है। सभी चाहते दोला उनके अनुसार चले। दोला का भी अपना एक अस्तित्व है। उसकी भी कोई इच्छा हो सकती है। ये कोई सोचता ही नहीं था। दोला भी उनको ना नहीं कह पाती। डर से कहीं ना कहने से वे साथ न छोड़ दें।

अकेले वो चल नहीं पायेगी। इस घर में सुमंत की यादें बसी हैं। वो इस घर को छोड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन जेठ के बात का विरोध करने से जेठ गुस्सा हो जायेंगे। वो पति के बीमा से मिले पैसे को सामने के बैंक में रखना चाहती थी। जरूरत पर खुद निकाल पायेगी। लेकिन सुमंत का दोस्त उससे किसी और नीति में निवेश के लिए फार्म भरवा के ले गया। वह बाइक दोला ने अपने घर के खर्च से बचा कर सुमंत को उपहार दिया था। भाई ले कर चला गया।

दोला ने देखा पानी सर से ऊपर जा रहा है। सहमते हुए सुमंत के दोस्त को फोन से बोली - "मैं बीमा का रुपया अपने घर के पास वाले बैंक मैं डालना चाहती हूँ।" दोला को उसने बहुत समझाने की कोशिश करके जब हार गया तो दोला के घर आकर उस फार्म को लगभग फेंकते हुए जाते-जाते बोल गया, "बैंक का एक खाता खुलवा कर नंबर दिजिएगा, पैसा उस खाते में चला जाएगा। आजकल भला करने का जमाना ही नहीं है।" दोला समझ गई थी कि ना करते ही सभी एक-एक कर उसका साथ छोड़ देंगे। उसे अकेले ही चलना होगा। एकाएक दोला को घुटन महसूस होने लगी। देखा सारे खिड़की दरवाजे बंद हैं। उठकर खिड़की खोल दी। बाहर की ताजी ठंढ़ी हवा लगते ही मन अच्छा हो गया। दूर नीले आसमान में बहुत सारे परिन्दे उड़ रहे थे। आज उसने भी एक छोटी-सी उड़ान भरी है। एक दिन जरूर वो भी उन परिंदों के साथ उड़ पाएगी।

नन्दिनी पान
सिस्टर इंचार्ज,
केन्द्रीय अस्पताल, कल्ला

संभाल लेती हूँ

ट्रेन समय से मिल जाती है, याद से टिकट भी सहेज जाती है
बैग्स मैं चुन-चुन कर खुद रखती जाती, टीटी जब आये आइडी निकाल लेती हूँ,
अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

हाथों में मेरे जो पानी की बोतल अब घर तक जाती है
स्टेशन पर छुटने वाली, स्नैक्स की पुड़िया, अब बैग में जतन से रखी जाती है,
भूख लगे तो घर का खाना निकाल लेती हूँ, अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

ट्रेन से बाहर कम रखती हूँ कदम, कभी बैठे कभी सोए कभी पढ़ते हुए,
वक्त मैं अपना निकाल लेती हूँ, अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

जानती हूँ हर कदम उठाते सवाल, कुछ भी हुआ तो मुझ पर उठेंगी उंगलियां हैं लोगों की,
मुझ पर ही होंगी परिस्थितियों को लोग भला क्या समझेंगे!
इसलिए मौका न मिले उनको, इसका ख्याल लेती हूँ,
अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

करती नहीं किसी से भी बेवजह बातें, कहाँ उतरूँगी? कब पहुंचूँगी? कौन आएगा लेने?
किसके घर जा रही? यहाँ तक कि हूँ कौन वो भी!! एक चुप में छुपा देती हूँ,
अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

माँ है ना सोई नहीं होगी जब तक ना पहुंचूँ फिक्र जरुर होगी,
इसलिए करके इत्तिला उनको, चादर सिर पर हिम्मत की तान लेती हूँ,
अब मैं सब, हाँ सब संभाल लेती हूँ ..

कैसे कटेगा? तुम कैसे रहोगी? इतना लम्बा सा जीवन तुम कब तक करोगी?
कैसे करती है मैनेज? क्या लगता नहीं तुमको कोई हो जो ख्याल से चढा उतार ले तुमको?
ऐसे सब सवाल मैं हँस के टाल देती हूँ, अब मैं सब कुछ संभाल लेती हूँ ..

जानती हूँ कोई हो ना हो मैं अपने लिए काफी हूँ, होता तो ठीक नहीं है तो क्या!
बाल झटक कर अपने सब असबाब झट से उतार लेती हूँ, अब मैं सब संभाल लेती हूँ।

भावना
उप प्रबंधक (कार्मिक),
मानव संसाधन विकास विभाग

साहिल की कलम से

वो तो पानी का बुलबुला निकला
क्या समझते थे और क्या निकला
وہ تو پانی کا بلبلہ نکلا
کیا سمجھتے تھے اور کیا نکلا

पत्थरों को तराशने वाला
ख़ुद किसी मोम का बना निकला
پتھروں کو تراشنے والا
خود کسی موم کا بنا نکلا

कल था ताजा बदन उसूलों का
आज लेकिन सड़ा-गला निकला
کل تھا تازہ دنن اصولوں کا
آج لیکن سڑا گلا نکلا

क्या तमाजत थी बंद आंखों में
ख़्वाब का तन बदन जला निकला
کیا تماضت تھیں بند آنکھوں میں
خواب کا تن بدن جلا نکلا

कल हुकूमत के ऊँचे कोठे से
सच कई बार हाँफता निकला
کل حکومت کے اونچے کوٹھے سے
سچ کئی بار حافتا نکلا

आलमे-बेखुदी में लब से मेरे
नाम तेरा ही बारहा निकला
عالم بے خودی میں لب سے مرے
نام تیرا ہی بارہا نکلا

बे सबब हम, सफर से डरते रहे
रास्तों से ही रास्ता निकला
بے سبب ہم سفر سے ڈرتے رہے
راستوں سے ہی راستہ نکلا

मायने शब्दों के –

तमाजत : तपिश
आलमे बेखुदी : अवचेतन अवस्था
बारहाः बारबार

सुशील ठाकुर 'साहिल'
मुख्य अभियंता (उत्खनन)
एस.पी. माइन्स क्षेत्र

शुक्रिया

खुदा कहूँ या कहूँ मैं ईश्वर, गुरू कहूँ या कहूँ परमेश्वर।
एक रुप अनेक रुप है तू, आस्था का स्वरुप है तू।।

कहने को तो निराकार है तू, पर इस सृष्टि का आकार है तू।
तू ही आदि, तू ही अंत, हर लेता तू सबके दुख तुरंत।।

मंजिल मेरा तू ही है, हार-जीत सब तू ही है।
तू ही मेरी पूँजी है, हर ताले की कुंजी है।
साथ तेरा जब तक है, मुकम्मल मेरा सब कुछ है।।

हर मझधार को तूने पार है लगाया, हर मुश्किल को भी दूर भगाया।
सही-गलत का भेद सिखाया, रास्ते के कांटों को भी फूल बनाया।।

पांव लड़खड़ाए जब जब मेरे, तब तब तूने थामा मुझको,
हाथ बढ़ा उठाया तूने, गिर के जब जब पुकारा तुझको।।

ना जाने कैसे कहूँ मैं तुझसे, बंधा हुआ हूँ जाने तुझसे कब से।
देना हमेशा साथ मेरा थामे रखना हाथ मेरा।

ऐ मेरे ईश्वर, ऐ मेरे खुदा, तेरी कृपा बरसती रहे मुझ पर।
मेरी इस जिंदगी के लिए, आज कहना है तुझे बस आज इतना,
शुक्रिया, शुक्रिया, शुक्रिया ।।

कृति गुप्ता
कार्मिक प्रबंधक
केंद्रीय अस्पताल, सांकतोड़िया

आज फिर से जीना आया है

आज फिर से जीना आया है,
आज फिर से जीना आया है,
बहुत कर ली समझदारी की बातें,
बहुत कर ली समझदारी की बातें,
अब मन शरारतों और नादानियों में समाया है,
सोच समझकर घुट घुट कर जीकर देखी जिंदगी,
अब खुलकर हँसना और गुनगुनाना हमें भाया है,
आज फिर से जीना आया है।

यूं तो जिंदगी से बहुत कुछ चाहा है,
थोड़ा सा खोकर कितना कुछ पाया है।
संघर्षों से जब घिरी जिंदगी तो अकेलापन भी भाया है,
ठोकरें मिली जब जिंदगी से तो खुद को टूटा सा पाया है।
हार जीत और कठिनाई होते हैं जीवन के अटूट भाग,
डट कर इनका सामना करने की हिम्मत रखो साथ।
बार-बार गिरकर,
बार-बार गिरकर,
जब खड़े होने का साहस हमने दिखलाया है,
आज फिर से जीना आया है,
आज फिर से जीना आया है।

आरती गुप्ता
लेखाकार
साँकतोड़िया अस्पताल

जय हो

सारी दुनिया होके मगन,
सर उठाके देखे गगन।
भारत का नाम करके रौशन,
चांद पर उतरा चंद्रयान।

धरती से दूर अंतरिक्ष,
सारे प्राणी, पक्षी और वृक्ष
जयगान गाए, जब विक्रम,
गर्व से रखा पहला कदम।

जहाँ अब तक कोई ना पहुँच पाया,
वहाँ भारत का झण्डा लहराया।
बढ़ते रहे भारत की शान,
जय प्रज्ञान, जय जय विज्ञान।।

डा. समंबिता जाणा
उप चिकित्सा अधीक्षक
नेत्र विभाग, केंद्रीय अस्पताल, कल्ला

लालच

सभी समाज में रह रहे जनों की मानवीय प्रवृत्तियाँ नानाविध समानताएँ एवं विषमताएँ लिए नित्य क्रियाएँ करती रहती हैं और उस समाज की उन्नति, शांति और या समृद्धि इसके विपरीत अवनति, अशांति और विनाश का द्योतक बनती हैं। समानताएँ एकता का रूप धारण करती नजर आती है तो विषमताएँ अंतर्विरोध को उत्पन्न करती है।

हम ईसीएल अधिकारी, कर्मचारी, मजदूर और समस्त हितधारक मिलकर एक समाज का निर्माण करते है जिसमें हमें समानताएँ रखनी है और विषमताओं को नित्य दूर करना या उससे नित्य दूर रहना है। इसके लिए हमें एकता और अंतर्विरोध उत्पन्न करने वाली प्रवृत्तियों का भान होना आवश्यक है। यही हम सबों का संयुक्त कर्त्तव्य है। ऐसी ही एक अंतर्विरोध उत्पन्न करने वाली प्रवृत्ति है - लोभ।

लोभ, लोलुपता, लालच, लालसा आदि नानाविध नाम एक ही प्रवृत्ति है जिसके कई रूप हैं और इसके परिणाम का क्रम सर्वप्रथम अशांति, फिर विनाश और अंत में अवनति है। मनुष्य के संज्ञान में भी नहीं रहता कि वह कब अवनत हो गया। कभी-कभी यह भी भान नहीं रहता कि वह अवनत अवस्था में है।

अपि मेरुसमं प्राज्ञमपि शुरमपि स्थिरम् ।
तृणीकरोति तृष्णैका निमेषेण नरोत्तमम् ।।

अर्थात् भले ही कोई व्यक्ति मेरु पर्वत की तरह स्थिर, चतुर, बहादुर दिमाग का हो। लालच उसे क्षण भर में तिनके के समान नष्ट कर सकता है।

लालच का शाब्दिक अर्थ है - "किसी चीज को पाने की अनुचित या बढ़ी हुई इच्छा" और इसका गुण है - "लालच, अधिक लालच, उससे अधिक लालच और उससे भी अधिक लालच" तथा "भ्रष्ट आचरण" इसका एक विशिष्ट रूप है। इसके अन्य रूपों का अन्वेषण आप स्वयं करेंगे तो आपको लालच के सत्य रूप का ज्ञान होगा।

जब कोई मनुष्य लालच को अपने पास आने देता है तो लालच बहुत प्यार से आता है। आने के बाद लालच अपने गुण का विस्तार करने लगता है और मनुष्य को अपने वश में कर अपने रूप में ढ़ाल लेता है और मनुष्य को नित्य लालच करने के लिए उद्यत करता रहता है। और धीरे-धीरे मनुष्य एवं उसके समाज को खा जाता है। अतः लालच से दूर रहिए और लोगों को भी इससे दूर रहने की प्रेरणा दें।

जय हिंद !

सुमेधा भारती
राजभाषा कर्मी, ईसीएल

क्षमा से क्षमता

अधिकतर लोग आज के युग में अपनी गलती को स्वीकार करने में अपनी बेइज्जती समझते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने जो कृत्य किया है उसे किसी भी कीमत पर सही साबित करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। इतनी मशक्कत करने पर उन्हें क्या-क्या मिलता है, पहला सामने वाले व्यक्ति से मन-मुटाव, बेकार की नोंक-झोंक, उग्र स्वर के प्रयोग से रक्तचाप में वृद्धि तथा गलत का साथ देने का गलत परिणाम। इसके विपरीत जब आपको लगता है कि आपसे सच में भूल हो गई है तो, "मुझे क्षमा कीजिएगा या I am sorry" का एक वाक्य इन सब समस्याओं को आने ही नहीं देता है। क्षमा माँगना वास्तव में आपकी क्षमता का प्रदर्शन करता है। आपने अपने अहं (Ego) पर विजय प्राप्त की है, आपने सही का साथ दिया है, आपने अपने में सुधार किया है और स्वयं में इंसानियत को बरकरार रखा है। सच तो यह है कि आत्मा हमेशा से जानती है कि सही क्या है असली चुनौती तो मन को समझाने में आती है।

धरम मंडल
निजी सचिव
DT(P&P) का सचिवालय
ई.सी.एल. मुख्यालय

हिन्दी व्याकरण ज्ञान धारा

सन्धि :– दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को सन्धि कहते हैं।

समास :– दो या दो से अधिक पदों के मेल या दो या दो से अधिक विभक्ति विहीन पद को समास कहते हैं।

कुम्हार

मिट्टी का कुम्हार से सदियों का रिश्ता हैं और इस रिश्तों के जड़े भी बहुत पुरानी हैं, कहते हैं कुम्हार इंसानी तहजीब का पहला फनकार था।

हड़प्पा मोहनजोदड़ो के समय से ही इस शिल्पकार ने कला को बेहद खूबसूरत ढंग से सहेजा है, मानो कि यह कुदरत की आखिरी नेमत हो उसके लिए।

इस व्यवसाय ने अथवा यूं कहें कि कला की इस अनुपम अनुकृति में पैरों को हाथों का हाथ बटाते देखा जा सकता हैं।

बेशक उसकी मंजिल का सफर मिट्टी से ही शुरू होता है और सफर के पहले पड़ाव में मिट्टी को बड़े उम्मीदों से तैयार किया जाता हैं।

घूमता हुआ चाक का पहिया बता रहा है कि सदियों से इंसानी सफर का पहिया बेशक घूम रहा हो, बहुत कुछ बदला हो, किन्तु इस चाक पर पड़ी हुई ये मिट्टी, काम करती इन हुनरमंद अंगुलियों में ज्यादा फर्क नहीं मिलता है।

और इसी के साथ मिट्टी के ढेर कुछ लम्हे चाक पर बिता कर चल पड़ता है अपनी अगली मंजिल की ओर।

इस कला को देखकर तो यही लगता है कि ऐसा क्या है जो इन जादुई अंगुलियों से संभव नहीं।

यह कला व्यवसाय नहीं उनके लिए मानो उनके ईश्वर की आराधना है।

चाक से उतरते ही ये नाजुक वस्तुएँ जो अभी तक शायद मिट्टी के ढेले ही हैं।

सूरज के आँचल में तब तक आराम करते हैं, जब तक कि अगले सफर के लिए तैयार नहीं हो जाते हैं।

सूखने के बाद ये बर्तन अपने अगले कदम की ओर बढ़ते हैं जहां इनको कुछ उपकरणों की सहायता से अधूरे से पूरा कर दिया जाता है।

अंत में बारी आती है अग्नि-परीक्षा की और इसके लिए भी इनको संघर्ष का एक कड़ा इम्तिहान देना होता हैं।

इसके बाद ही मिट्टी के ढ़ेले इस जमाने की जरूरत बनने और उसे पूरा करने के काबिल हो पाते हैं।

बदलाव का ये दौर तो चलता रहेगा, किन्तु मिट्टी के बर्तन की ये सौंधी सुगंध कभी तो इस बाजारू सभ्यता को मात देगी।

और इसी आस को जीता रहेगा कुम्हार ।
मिट्टी से मुहब्बत का साक्षात दर्शन है कुम्हार ।

बिट्टू कुमार
सहायक प्रबंधक
जनसंपर्क विभाग

गुरुमुखी लिपि एवं पंजाबी भाषा

गुरुमुखी उस लिपि का नाम है जिसका उपयोग मुख्य रूप से पंजाबी और द्वितीयतः सिंधी भाषा लिखने में किया जाता है। इसका प्रयोग सिख धर्मग्रंथ और समकालीन भारत में किया जाता है। यह देवनागरी जैसी पुरानी ब्राह्मी लिपि और क्षेत्र की अन्य लिपियों जैसे शारदा, तकरी, महाजनी आदि से विकसित है। गुरुमुखी अक्षर देवनागरी से भी पुराने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि गुरुमुखी शब्द (सिख) गुरुओं के मुख (शाब्दिक रूप से मुँह या होंठ) से आने वाली बातों को रिकॉर्ड करने के लिए इन अक्षरों के उपयोग से प्रचलित हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पंजाबी बोली में लिखे पत्र, गुरु अंगद देव (यहाँ तक कि गुरु नानक के समय) से पहले भी अस्तित्व में थे क्योंकि उनकी उत्पत्ति ब्राह्मी में हुई थी, लेकिन लिपि की उत्पत्ति का श्रेय श्री गुरु अंगद देव को दिया जाता है। आमतौर पर यह भी स्वीकार किया जाता है कि गुरुमुखी ब्राह्मी परिवार का एक सदस्य है। ब्राह्मी एक आर्य लिपि है जिसे आर्यों द्वारा विकसित किया गया था और स्थानीय चलन 8वीं और 6ठीं शताब्दी ईसा पूर्व के बीच हुआ था।

तीसरी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में फारसियों ने पंजाब में शासन किया था। उनकी लिपि ने खरोष्ठी लिपि के विकास में मदद की जिसका उपयोग गांधार एवं सिंधी और बड़े पैमाने पर पंजाब में 300 ईसा पूर्व और तीसरी शताब्दी ईस्वी के बीच किया गया था। लेकिन फिर भी ब्राह्मी, जिसके पंजाब में विकास के दौरान कई परिवर्तन हुए थे, आमतौर पर खरोष्ठी के साथ प्रयोग की जाती थी। बैक्ट्रियन राजाओं के सिक्के और कुषाण शासकों के शिला लेख हैं जिन पर फारसी और खरोष्ठी दोनों लिपियाँ हैं।

प्रारंभ में गुरुमुखी लिपि में पैंतीस अक्षर थे। इन पैंतीस अक्षरों के अलावा कुछ फारसी ध्वनियों को स, क, ख, ग, ज एवं फ आदि अक्षरों के अंतर्गत रेखांकित किया जाने लगा है। उपर्युक्त शब्दों के नीचे एक बिंदु लगाकर एक और ध्वनि बनाई गई है। गुरुमुखी की प्रचलित वर्णमाला अब इस प्रकार है :-

ੳ	ਅ	ੲ	ਸ	ਹ
ਕ	ਖ	ਗ	ਘ	ਙ
ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਞ
ਟ	ਠ	ਡ	ਢ	ਣ
ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ
ਪ	ਫ	ਬ	ਭ	ਮ
ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	ੜ
ਸ਼	ਖ਼	ਗ਼	ਜ਼	ਫ਼	ਲ਼

अधिकांश विद्वानों ने गुरमुखी लिपि की इस विशेषता पर ध्यान नहीं दिया। यह संभवतः एक मात्र ऐसी लिपि है जो 'अ' से नहीं बल्कि 'ऊ' से शुरू होती है जबकि देवनागरी, रोमन, अरबी-फारसी, ग्रीक आदि लिपियाँ 'अ' से शुरू होती हैं। गुरमुखी के प्रारंभिक अक्षर ऊ (ੳ) की प्रधानता के पीछे एक मत यह है कि इसके पीछे 'ओंकार' अथवा 'ॐ' की मान्यता कार्यरत थी। दूसरा महत्वपूर्ण कारण ध्वन्यात्मक है, इस पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। किसी भी लिपि के पात्रों (अक्षरों) में तीन आवश्यक गुण होते हैं :

1. प्रत्येक अक्षर या लिपि का एक नाम होता है, जैसे गुरमुखी के ੳ (उड़ा), ਅ (ऐड़ा), ੲ (ईड़ी) या ए.बी.सी. इत्यादि।

2. प्रत्येक प्रतीक का कोई न कोई आकार भी होता है। जैसे (क), (ख) और (ग)
3. प्रत्येक अक्षर में कोई न कोई ध्वनि या स्वर भी होती है। जैसे (ए), (बी), (सी) आदि।

गुरुमुखी लिपि की संरचना में सबसे पहले स्वर-वाहक लिपि चिह्न हैं। शब्दांश में स्वर का केन्द्रीय महत्व है, जबकि व्यंजन का गौण महत्व है। अतः केन्द्रीय तत्व का प्रथम आना आवश्यक था। ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से ੳ (उड़ा), ਅ (ऐड़ा), ੲ (ईड़ी) का क्रम भी तर्कसंगत है। यह क्रम उच्चारण स्थान की व्यवस्था के अनुसार है। इसी प्रकार 'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग तथा 'प' वर्ग आदि व्यंजन लिपि चिन्हों का क्रम भी उच्चारण स्थान के अनुसार होता है।

पंजाबी भाषा भारतीय आर्य भाषा, जिसे शौरसेनी अपभ्रंश के साथ उत्पन्न हुआ माना जाता है। लेकिन इसके स्वर विज्ञान और रूप विधान, दोनों में आरंभिक प्राकृत भाषाओं, विशेषकर पालि और आदि-आर्य भाषाओं का प्रभाव है। इस प्रकार पंजाबी भाषा प्राचीन पंजाब की सांस्कृतिक और भाषा शास्त्रीय अंतर्धाराओं का एक सतत भाषा शास्त्रीय इतिहास प्रस्तुत करती है।

पंजाबी भाषा भारत तथा पाकिस्तान में बोली जाती है। भारत में यह लगभग ढाई करोड़ नागरिकों की 'मातृभाषा' है। भारत के पंजाब राज्य में इसका उपयोग स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में माध्यम भाषा के रूप में भी होता है।

आधुनिक पंजाबी की सबसे प्रमुख विशेषता, इसकी तीन प्रकार की स्वर प्रणाली है, जिसके उच्च, मध्यम और निम्न स्वर हैं। स्वर विज्ञान की दृष्टि से इन्हें उच्च उतार-चढ़ाव, मध्य उतार-चढ़ाव, तथा बहुत निम्न चढ़ाव वाली रूपरेखा के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो दो सतत अक्षरों पर अनुभूत होती है।

दूसरी सबसे बड़ी विशेषता इसमें शब्दों की विशाल संख्या, विशेषकर प्राचीन स्थानों के नाम तथा उनसे उत्पन्न संज्ञाएँ व विशेषण और मूर्धन्य स्वर (तालू को मुड़ी हुई जिह्वा के शीर्ष के स्पर्श से उच्चारित ध्वनि) है। ऐसे अधिकांश शब्द पश्चिमी पुरा-आर्य सभ्यताओं में पाए जाते हैं।

पंजाबी में सबसे पुरानी रचनाएँ नाथयोगी काल की हैं। जो नौवीं से चौदहवीं शताब्दी की है, जब पंजाब सामाजिक, धार्मिक आंदोलनों का मुख्य केंद्र था। बनावट की दृष्टि से इन रचनाओं की भाषा शौरसेनी अपभ्रंश के निकट है हालांकि शब्द संग्रह तथा लय पर बोलचाल की भाषा और लोकभाषा का काफी गहरा प्रभाव है।

11वीं से 14वीं शताब्दी के बीच एक सबसे महत्त्वपूर्ण भाषाई और सांस्कृतिक आंदोलन का नेतृत्व सूफी संतों ने किया। मुख्यधारा की रूढ़िवादिता के ख़िलाफ अस्तित्वात्मक विचारधारा पर बल देने में वे योगियों के समान थे। शास्त्रीय ब्राह्मणवाद में योगी थे और रूढ़िवादी इस्लाम में सूफी। भाषा के मामले में परिवर्तन अधिक व्यापक था। योगी तो भारतीय धार्मिक परंपरा के भीतर ही कार्यरत थे, अतः उनकी भाषा लगातार अपभ्रंश रूप-विधान और वाक्य विन्यास से समृध्द होती रही। सूफियों को सब कुछ नये ढंग से शुरू करना पड़ा, फारसी शब्द संग्रह के आध्यात्मिक स्वरों से अलग सूफियों ने अपने भाषाई उपदेशों को सबसे लोकप्रिय लोकस्तर पर कायम किया। कई मायनों में वे पंजाबी भाषा के पहले कवि थे, जिन्होंने साहित्य की योगी परंपरा को जारी रखते हुए पंजाब के मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के प्रत्येक आयाम में प्रवेश किया।

20वीं सदी के पंजाब में कई सामाजिक और धार्मिक राजनीतिक आंदोलनों का प्रभाव रहा, जिसमें ऐतिहासिक विकास-प्रक्रिया से विखंडन हुआ। अब तक पंजाबी भाषा, साहित्य और संस्कृति सभी पंजाबियों की विरासत थी। पारंपरिक धार्मिक स्वर से आच्छादित इन आंदोलनों के फलस्वरूप मुसलमानों ने उर्दू, हिंदुओं में हिंदी और सिखों ने पंजाबी को अपना लिया, हालांकि इससे बोली पर बहुत कम प्रभाव पड़ा, लेकिन लिखित, मानक भाषा का शब्द-विन्यास विशिष्ट सिख संस्कृति से प्रभावित हो गया है।

जसविन्दर सिंह घुमन
कार्यालय अधीक्षक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, ईसीएल मुख्यालय

वसुधैव कुटुम्बकं शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। वसुधा अर्थात पृथ्वी एवं कुटुंब अर्थात परिवार। सामान्य रूप से जिसका अर्थ है सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है। इस शब्द का प्रथम उल्लेख उपनिषद में किया गया था। वर्तमान स्वरूप में यदि हम इसके अर्थ का आकलन करें तो पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव-जन्तु अथवा समस्त प्रजाति को उसके भाषा, जाति, राष्ट्रीयता, रंग, नस्ल के आधार पर भेद-भाव किए बिना वैश्विक एकता, सहयोग, सद्भावना, बनाए रखना जिससे सभी एक दूसरे के व्यक्तिगत विकास में सहयोग प्रदान कर सके एवं वैश्विक उन्नति में एक दूसरे के पूरक बन सके, इसी उद्देशय को प्राप्त कर इसे सार्थकता प्रदान कर सकते हैं।

मनुष्य इस विचार के पोषण में कैसे योगदान कर सकता है?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके प्राथमिकता का प्रथम केंद्र उसका परिवार होता है। परिवार एक दूसरे से भावनात्मक लगाव से जुड़ा होता है, एक दूसरे के सुख-दुःख का साथी होता है, किसी परिवार के सदस्यों के बीच वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, परंतु उसकी प्रवृत्ति हमेशा आपसी सहयोग एवं सभी को साथ लेकर चलने की होती है, आपसी सौहार्द बनाए रखकर एवं सबके विचारों में सामंजस्य बनाए रखने के इस गुण को वैश्विक स्तर पर विकसित करने की योग्यता सिर्फ मनुष्य रखता है।

ऐसा माना जाता है कि इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर मनुष्य सबसे शक्तिशाली जीव है, अपनी इस शक्ति के बल पर उसने सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज किया है, विश्व के भूखंड को समय-समय पर विभाजित भी किया जो उस समय की आवश्यकता के अनुरूप समझा गया परंतु इसमें उसमें राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होती गई और वैश्विक एकता की भावना पिछड़ती गई जिससे सिर्फ अपने राष्ट्र का विकास और अन्य भू-भाग के प्रति यह भावना जाग्रत न हो पाई। सभी जीवों को संपोषित कर उनके अस्तित्व को बनाए रखने का कार्य मनुष्य ही कर सकता है।

भारत का "वसुधैव कुटुंबकम्" की परिकल्पना को आगे बढ़ाने में योगदान –

"वसुधैव कुटुंबकम्" शब्द भारत में ही जन्मा है, हमारे ऋषियों ने इस विचार को प्राथमिकता से वर्णित किया है। वैश्विक स्तर पर इस विचार को रखने वाला प्रथम देश भारत ही था। भारत ने अपने इतिहास में सभी जातियों, समाजों, वर्णों, राष्ट्रीयता वाले लोगों को फलने-फूलने का सदैव अवसर दिया है। भारत की पवित्र भूमि ने कभी धार्मिक, जातीय, वर्णीय भिन्नता के आधार पर किसी भी वर्ग को संरक्षण से वंचित नहीं किया है। 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में जब अंग्रेज भारत आए और औद्योगीकरण के विचार को प्रबलता से बढ़ावा दिया जा रहा था तब उपनिवेश बनाने की प्रथा की शुरुआत हुई जिससे लोगों में वैश्विक एकता की जगह राष्ट्रवाद ने प्रमुखता से भावनात्मक जुड़ाव करना प्रारंभ किया। परंतु इतिहास साक्षी है कि विश्व में हिंसा-उन्माद के शिकार शोषित वर्गों का संरक्षण करने में यह देश अग्रणी रहा है। उदाहरण के तौर पर फारस से आए शरणार्थी जिन्हें पारसी कहते है, आज भारत की एक अल्पसंख्यक समुदाय है परंतु काफी उन्नति और विकास कर चुकी है।

इतना ही नहीं, सन् 1971 में जब बांग्लादेश के मुसलमानों ने भारत में शरणार्थी के तौर पर शरण ली तो भारत ने सामाजिक न्याय एवं उनके अस्तित्व को सुरक्षित बनाए रखने के लिए अथक प्रयास किए एवं कड़े कदम उठाए जो वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार को संपोषित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर भारत के प्रयास –

गत वर्ष भारत में आयोजित G-20 सम्मेलन का ध्येय वाक्य - "वसुधैव कुटुंबकम्" के विचार पर आधारित रहा जिसका उद्देश्य "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" था। यह विचार वैश्विक एकता, सामाजिक बंधुता एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना को मजबूती प्रदान करता है। वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता, वैश्विक स्वास्थ्य संकट को दूर कर उसके होने वाले प्रभावों को कम करने की पहल में सभी देशों का योगदान बहुत जरूरी है।

भारत ने कोरोना काल (कोविड-19) के दौरान भी इस विषय को काफी गंभीरता से लिया था। जब सम्पूर्ण विश्व इस गंभीर स्वास्थ्य संकट से जूझ रहा था तब भारत ने आवश्यक दवाइयों की आपूर्ति एवं वैक्सीन के निर्यात से जरुरतमन्द देशों की सहायता करने में एक बड़ी भूमिका अदा की थी।

वैश्विक चुनौतियों से निपटने का एक सक्षम मार्ग –

आज विश्व की कई बड़ी चुनौतियों में से एक आतंकवाद, हिंसा एवं भ्रष्टाचार है। विश्व ने अब तक दो विश्व युद्ध झेले हैं, जिनसे उत्पन्न विनाश, हिंसा, आतंक को हमारी कई पीढ़ियों ने झेला है। सामाजिक द्वेष में अंधे होकर एवं अपना प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ में जो विनाश हमारे पूर्वजों ने किया है उसके प्रभाव से आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखना एक बड़ी जिम्मेदारी है ताकि हम तीसरे विश्व युद्ध की परिस्थितियाँ बनने से रोक सके।

विश्व के कई देश आज आतंकवाद से ग्रस्त हो चुके हैं निजी स्वार्थ, धार्मिक वर्चस्व एवं प्रभुत्व स्थापित करने की लोलुपता ने कई देशों के नागरिकों का जमकर शोषण किया है। इसने हिंसा को बढ़ावा दिया है, आतंकवाद के शिकार वर्ग में महिलायें एवं अबोध बच्चे भी अछूते नहीं रह गए हैं। अपने ही देश में आज लोग शरणार्थी बनकर जीने को विवश हैं कई देश के लोग अपनी मातृभूमि से पलायन कर चुके हैं।

यहाँ "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना के विकास का जागरण कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, जब इस भावना के अर्थ को लोग समझेंगे उसके अनुरूप व्यवहार करेंगे तो निजी स्वार्थ, अपना प्रभुत्व स्थापित करने, धार्मिक वर्चस्व स्थापित करने की जो होड़, शोषण, हिंसा, भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद जैसी बुराइयों को जन्म दे रही है उस पर एक कड़ा अंकुश लगाया जा सकता है।

ऐसे में हम वैश्विक एकता, सद्भावना, विकास की दिशा में एक वैश्विक इकाई की तरह कार्य कर पाएंगे जिससे कोई भी देश अछूता ना रह पाएगा। हम आर्थिक असमानता, आतंकवाद, वैश्विक स्वास्थ्य संकट, जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभाव को रोकने की दिशा में मिलकर सार्थक पहल कर पाएंगे।

भारत के अंदरूनी मुद्दों एवं राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक महत्ता –

भारत विविधताओं का देश है। भारत में अनेक जाति, धर्म, समाज एवं अलग-अलग मान्यताओं पर विश्वास रखने वाले लोग रहते हैं। इतनी बड़ी आबादी एवं विविधता वाली जनसंख्या में वैचारिक मतभेद होना सामान्य बात है। परंतु आज इस मतभेद ने उग्र रुप ले रखा है।

हाल ही में हुई मणिपुर हिंसा एवं हरियाणा में हुई हिंसा इसका ज्वलंत उदाहरण है। मणिपुर की हिंसा ने सभी देशवासियों को सोचने पर विवश किया है, जहाँ जनजातीय मतभेद ने हिंसा का ऐसा रूप धारण किया है कि वह राज्य हिंसा में आंतरिक रूप से जल रहा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यहाँ इस विचार को कैसे उपयोग में लाया जा सकता है। हम तो पूरे विश्व को एक परिवार में पिरोकर चलाने की बात कर रहें हैं। इससे अंदरूनी मुद्दों का क्या संबंध है परंतु ध्यान देने वाली बात यह है कि जब तक एक देश अपने अंदरूनी मुद्दों का समाधान सक्षमता पूर्वक नहीं कर पाएगा तो वैश्विक पटल पर वह इसे सुलझाने में दृढ़तापूर्वक कार्य कैसे कर पाएगा। एक ओर जहाँ हम वैश्विक स्तर पर एक अग्रणी भूमिका अदा करने की बात कर रहें हैं वहीं दूसरी ओर यदि हम अंदरूनी मतभेद को सफलता से समाधान नहीं कर पा रहें है तो वैश्विक एकता की स्थापना कैसे होगी? इसलिए यह जरूरी है कि हम जातिवाद, धार्मिक भिन्नताओं एवं सामुदायिक मतभेदता को समाप्त करने का प्रयास करें। अपने लोगों में सौहार्द, परस्पर सहयोगिता, सद्भावना एवं अखंडता के विचार को जाग्रत करें।

इस दिशा में सामजिक, राजनीतिक और साहित्यिक पहल की आवश्यकता है। समाज में व्याप्त भिन्नता को अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझना चाहिए। इस देश की संप्रभुता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए हम सामाजिक रुप से सक्षम होंगे तभी राजनीतिक तौर पर सरकार बड़ी चुनौतियों से निपटने में सक्षम होगी। इस दिशा में साहित्यिक पहल भी जरुरी है ताकि यह भावना जाग्रत हो सके।

जैसा कि भारत का यह मानना रहा है कि "अनेकता में ही एकता निहित है" इसी विचार को समझ कर हमें सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के लिए यदि कार्य करना है तो वैश्विक तौर पर सभी देशों को एकजुटता से प्रयास करने होंगे।

वर्तमान समय की मांग –

वर्तमान में भारत सरकार ने "सबका साथ, सबका विकास एवं सबका विश्वास" इस विचार पर प्रमुखता से बल दिया है, जो वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उतना ही उपयोगी है। जरूरत है विकसित एवं सम्पन्न देशों को आगे आने की ताकि वह इस भावना को सार्थकता देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके क्यूँकि इस भावना को सिर्फ जाग्रत करने का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा यदि हम धरातल से जुड़ी समस्याओं के निवारण का मार्ग ना ढूंढ सकें। हर देश अपने किसी न किसी संसाधन में सक्षम है जो वैश्विक एकता, विकास एवं उज्जवल भविष्य को साकार रूप देने में तथा संसाधन से वंचित राष्ट्रों की उन्नति में योगदान अदा कर सकते हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं कि वैश्विक स्तर पर एकजुटता, सौहार्द सहयोगिता की भावना का प्रबल विकास एवं पृथ्वी को एक परिवार रूप समझने की परिकल्पना को सार्थकता प्रदान तभी किया जा सकेगा जब परिवार के सभी सदस्य अर्थात सभी देश एकजुटता से इस दिशा में सतत प्रयास जारी रखे। यदि इस दिशा में गंभीरता से प्रयास किया जाए एवं सुनियोजित ढंग से सभी सदस्य देश मिलकर योजना बनाएँ तथा समय-समय पर विभिन्न मुद्दों पर बैठक आयोजित कर इसे हल करने की दिशा में कार्य करें तभी हम धरातल पर इस दिशा में सार्थक रूप से कार्य कर पाएँगे।

आरती कुमारी
लेखाकार,
सांकतोड़िया केंद्रीय अस्पताल

हाय ये जालिम गर्मी

गर्मी का मौसम अपने चरम पर है, आज जब मैं ऑफिस आया तो देखा बहुत सारे अधिकारी और कर्मचारी अपनी-अपनी बाइक और कार पार्किंग के लिए पेड़ की छाँव ढूंढ रहे है, रास्ते में भी जो लोग लंबी यात्रा कर रहे है बीच-बीच में विश्राम करने के लिए पेड़ की छाँव ढूंढ रहे थे, गन्ने का रस बेचने वाला भी पेड़ की छांव में अपनी दुकान लगा कर खड़ा था और रस पीने वाले भी यदा कदा टहनी की छाँव के नीचे छुपने का प्रयास कर रहे थे, जब इन्सानो के लिए पेड़ की छाँव कम पड़ रही है तो फिर जानवरो और पक्षियों के हालत के बारे में सोचने का समय किसके पास है। खैर देखते- देखते इस बार भी गर्मी का मौसम हर साल की तरह बीत जाएगा, भला इतना क्या सोचना।

फिर बारिश का मौसम आएगा मूसलाधार बारिश होगी तब भी लोग बारिश से बचने के लिए पेड़ का ही सहारा ढूंढते है और जैसे ही बारिश बंद होती है निकल पड़ते है अपनी-अपनी मंजिल की ओर, पर मंजिल पर पहुँचकर कभी हमने सोचा है जिन पेड़ो का सहारा हमने तपती गर्मी या मूसलाधार बारिश में लिया वो पेड़ बहुत तेजी से कम होते जा रहे हैं।

पेड़ किसने काटे ? क्यों काटे ? अगर इसी पर तर्क-वितर्क करते रहेंगे तो किसी का भला नहीं होगा, जरूरत है ये सोचने की कि जो हुआ हो गया आगे हम क्या कर सकते है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को भी पेड़ो का सहारा तपती गर्मी या मूसलाधार बारिश में मिल सके।

दूसरे कर रहे है या नहीं ये देखना छोड़े और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जितना संभव हो वृक्ष लगाएँ, अपने जन्मदिन पर, अपने बच्चों के जन्मदिन, शादी की सालगिराह पर वृक्ष लगाएँ। अकेले, अपने परिवार या किसी सामाजिक संस्था के साथ मिल कर वृक्ष लगाएँ, परिवार में कोई नया मेहमान आया है उसकी खुशी में वृक्ष लगाएँ, कोई अपना बिछड़ गया उसकी याद में वृक्ष लगाएँ। इस दुनिया को ना जाने कब अलविदा कहना पड़े, अलविदा कहने से पहले इस दुनियाँ में अपनी निशानी छोड़ जाएँ। वृक्ष लगाएँ।

राजकुमार आश्रे
सुरक्षा निरीक्षक
सुरक्षा विभाग, ई.सी.एल. मुख्यालय

मेरे जीवन का लक्ष्य

मनुष्य के जीवन में एक लक्ष्य होना जरुरी है। सभी का एक लक्ष्य होना जरुरी है ताकि मनुष्य अपनी आगे की जिन्दगी में अपने लक्ष्य द्वारा नाम कमा पाए। काफी से मनुष्य अपनी जिन्दगी में डाक्टर या इंजीनियर बनना चाहते हैं, तो काफी से लोग भक्ति के द्वारा अपने ईश्वर को पाना चाहते हैं तो एक चिकित्सक को गरीबों का मुफ्त में इलाज करना चाहिए। लेकिन मेरा लक्ष्य सबसे अलग है जहां लोग डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहते हैं।

वैसे तो मेरा बहुत अलग सपना है मेरा सपना एक बहुत बड़ी K-Pop Star बनना है लेकिन सब को यह काम एक मजाक लगता है। क्योंकि मनुष्य ने पूरे जीवन में ऐसा सपना नहीं देखा था। लेकिन पहली पहली बार में तो यह बहुत मुश्किल था पर जैसे मैं आगे बढ़ी तो मुझे तो यह करने में पसीना निकल गया फिर भी अपने सपने को पूरा करने के लिए लगी हुई हूँ।

क्यूँ बनना है?

मैं K-Pop Star बनान चाहती हूँ ताकि मैं भी श्रिया लेंका की तरह भारत का नाम ऊँचा कर सकूँ। वैसे तो मुझे ब्लैक पिंक पसंद है लेकिन मैं भी टीवी के एड में आना चाहती हूँ जैसे श्रेया आई थी। अब मुझे मेरे सपने को पूरा करने से कोई भी नहीं रोक सकता है।

मुझे प्रेरणा किसने दी?

मुझे प्रेरणा तो (YG-Ententainment) ने दी और कूजहे तो (sm, yg, bignit) ने दी और इसमें तो Black-Pink और Baby-Monster तथा Black-Swan ने भी दी थी इसलिए तो मुझे एक K-Pop Star बनना है।

आपका कुल काम?

इस काम को करने में हमें पहले तो योगा और कसरत करना होगा और नाच और गाने का अनुभव है।

अनुराधा कुमारी केवट
कक्षा - पंचम
विद्यालय - पारबेलिया कोलियरी उच्च विद्यालय

खेलकूद में महिलाओं के बढ़ते कदम

मैं भी छू सकती हूँ आकाश
बस मुझे भी है एक मौके की तलाश

स्त्री शक्ति के अगले संस्करण में, मैं करुणा सिंह, आप सबों के समक्ष खेलकूद में महिलाओं के बढ़ते योगदान को दर्शाने जा रही हूँ। समाज में महिलाओं के लिए खेल-कूद को लेकर कुछ अवधारणाएँ और नियम ऐसे हैं जो उनके कदमों को बांधने का भरपूर प्रयास करती हैं। परन्तु इन महिलाओं ने अपने मेहनत और लगन के माध्यम से समाज के सामने खुद को प्रमाणित किया है और समाज के उस वर्ग के लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि उनकी यह समझ किस स्तर तक सुव्यवस्थित और साक्षर समाज को परिभाषित करती है। प्रत्येक कठिनाई से लड़ते हुए मैरी कहम, हिमा दास और मीरा बाई चानू जैसी कई महिलाओं ने महिलाओं को अपनी इच्छा से खेल का चुनाव करके उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया है।

आँकड़ों की बात करें तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बीते पाँच वर्षों में महिला खिलाड़ियों की संख्या में काफी इजाफा देखने को मिला है। खेल मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2018 से 2020 की अवधि में खेलो इंडिया गेम्स में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी में कुल 160 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

हमने अक्सर अपने बुजुर्गों और बड़ों को यह कहते सुना है कि "खेलोगे कूदोगे होगे खराब पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब"। कई हद तक हम इस जुमले पर अमल भी करते आये हैं। अगर हम इतिहास उठा कर देखें और समझने की कोशिश करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कुछ समय पहले खेल को उतना महत्वपूर्ण नहीं समझा जा रहा था। भारत के बाहर हमें कई ऐसे देश देखने को मिल जाते हैं जहाँ पर खेल को और बाकि चीजों; जैसे कि पढ़ाई, जितना ही महत्व दिया जाता है और उसका नतीजा भी हम उन देशों को मिल रहे कई पदक के रुप में देख सकते हैं। यदि हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस बात का अवलोकन करें तो हमारा भिन्न परिस्थितियों से सामना होता है। भारत में खेल जगत में पुरुषों की भागीदारी कुछ हद तक संतुष्ट करती थी परन्तु यदि महिलाओं की भागेदारी को आंका जाए तो इनकी हिस्सेदारी संतोषजनक भी नहीं थी, जिसका नतीजा भारत का विश्व में खेल अंक तालिका में लगातार गिरता स्तर था। परन्तु बदलते समय के साथ महिलाओं की बढ़ती हिस्सेदारी ने पूरे विश्व में खेल क्षेत्र में भारत को कई पदक के साथ एक नई पहचान भी दिलायी है।

खेल क्षेत्र को अपना उद्देश्य बनाती भारतीय महिलाएँ

वर्तमान समय में भारतीय महिलाएँ खेल के अलग-अलग प्रारूपों को अब अपना लक्ष्य बना रहीं हैं। बात चाहे बॉक्सिंग की हो या वेट लिफ्टिंग की या फिर हम टेनिस से लेकर बैडमिंटन की बात करें, हर क्षेत्र में महिलाएँ बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। भारतीय खेल जगत में कई ऐसे नाम हैं जिन्होंने केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में इतिहास रचा है। हम कह सकते हैं कि इस उपलब्धि के पीछे महिलाओं का खेल के प्रति उभरता रुख और लोगों का महिलाओं में जगता विश्वास है। पी. टी. उषा, मैरी कॉम, पी. वी. सिंधु, मीरा बाई चानू, हिमा दास या फिर हम सानिया मिर्जा का उदाहारण ले लें, इन महिलाओं ने खेल को अपना भविष्य चुनकर भारत को खेल जगत में अदभुत उपलब्धि दिलायी है। इन महिलाओं के संघर्ष और सफर की कहानी और महिलाओं के लिए प्रेरणा बन रही हैं।

- **विश्व में बॉक्सिंग से अपना लोहा मनवाती मेरी कॉम की कहानी से लोगों को मिलती प्रेरणा**

मणिपुर की रहने वाली मैंगते चाग्नेइजैंग मैरी कॉम आठ बार विश्व मुक्केबाजी का खिताब अपने नाम कर चुकी हैं। अपने बॉक्सिंग रुझान के बारे में मेरी कॉम बताती हैं कि 'जब उन्होंने पहली बार कुछ लड़कियों को लड़कों से रिंग में लड़ते देखा तो उनमें भी बॉक्सिंग करने की इच्छा जगी और यहीं से उनके करियर की शुरुआत हुई।' हालाँकि कुछ समय बाद शादी होने और दो बच्चे हो जाने के कारण उन्हें बॉक्सिंग से दूरी बनानी पड़ी। परन्तु दोबारा बॉक्सिंग में खुद को स्थापित करके लगातार विश्व चौम्पियन का खिताब अपने नाम कर इतिहास रचते हुए उन्होंने बच्चे होने के बाद कैरियर खत्म हो जाने वाले मिथ्या को तोड़ कर एक मिशाल कायम किया।

- **एथलीट में अपने संघर्ष से महिलाओं को नया मुकाम दिलातीं हिमा दास**

ढिंग एक्सप्रेस के नाम से जानी जाने वाली हिमा दास ने आईएएएफ वर्ल्ड चौंपियनशिप दौड़ प्रतियोगिता में भारत को स्वर्ण दिलाकर सबसे कम उम्र वाली भारतीय महिला एथलीट बनने का खिताब अपने नाम किया। इसके साथ ही उन्होंने अपने संघर्ष से लोगों को किसी भी परिस्थिति में ना रुकने या फिर ना मुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। हिमा दास की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के बाद भी उनके परिवर ने उनके रुझान में उनका पूरा सहयोग दिया। हालाँकि शुरुआत के दिनों में हिमा दास फुटबॉल खेलना चाहती थीं परन्तु अपने कोच के सुझाव पर उन्होंने दौड़ना शुरू किया, जिसका नतीजा आज पूरा विश्व देख रहा है। एक समय पर दौड़ने के लिए जूते ना होने वाली हिमा दास आज एक जूते की कंपनी की ब्रांड अम्बेस्डर हैं और यह उपलब्धि उन्होंने अपनी मेहनत से हासिल की है।

- **वेट लिफ्टिंग में नाम बना दुनिया की मान्यताओं को चुनौती देतीं मीरा बाई चानू**

साइखोम मीरा बाई चानू एक ऐसा नाम है जो खेल में वजन उठाने के साथ-साथ देश की कई महिलाओं की आकांक्षाओं का भार भी उठा रहीं हैं। 2016 के रियो ओलम्पिक में रजत पदक जितने वाली मीरा बाई चानू ने टोक्यो ओलिंपिक में फिर से 202 किलोग्राम में 21 वर्षों बाद रजत पदक जीत कर इतिहास के पन्नो में अपना नाम दर्ज कर लिया। मीरा बाई चानू ने तीरंदाजी में अपना करियर शुरु किया था परन्तु कुछ समय के बाद उन्होंने भारतोल्लन में खुद को स्थापित करने का निर्णय ले लिया। देश की पहली महिला रजत विजेता कुंजरानी ने मीरा बाई चानु के बारे में कहा कि 'मीरा बाई ने सीमित संसाधनों के साथ संघर्ष करते हुए कई वर्ष घर से दूर रहकर कठिन रास्तों को पार करते हुए यह रास्ता तय किया है।'

अंत में हम कह सकते हैं कि ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय महिलाओं का शानदार प्रदर्शन इस बात की ओर संकेत दे रहा है कि बदलाव की लहर चल पड़ी है जो दूर तक जाएगी। व्यावहारिक और सामाजिक बदलाव ही महिलाओं के आगे आने के द्वार खोलेगा। जैसे-जैसे महिलाएँ शिक्षा, कैरियर और अपनी जिंदगी के फैसले स्वयं लेने में सक्षम होती जाएंगी, वैसे-वैसे लोग भी इसे स्वीकार करने लगेंगे और खेल जैसे क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी बढ़ती जाएगी। संक्षेप में कहें तो हम सभी को अपनी परंपरागत सोच से बाहर निकलना होगा और यह स्वीकार करना होगा कि "मेडलिस्ट पेड़ पर नहीं उगते, उन्हें बनाना पड़ता है, प्यार से..मेहनत से और लगन से।"

मौका नहीं मिलता बेटियों को इस बात का गम है,
जिन बेटियों को मौका मिला उन्होंने दिखाया अपना दम है।
कुछ भी कर सकती है बेटियाँ उन्होंने ये करके दिखाया है,
कई गोल्ड मेडल लाकर पूरी दुनिया को बताया है।

करुणा सिंह
सामग्री प्रबंधन विभाग
ईसीएल मुख्यालय

तथा, व, और, एवं में अंतर

अंग्रेजी में प्रयुक्त And शब्द के लिए हिंदी में चार तरह के शब्द प्रयोग में आते हैं जो क्रमशः एवं, तथा, और, व हैं। सामान्यत : इन्हें परस्पर समानार्थी मानकर यादृच्छिक प्रयोग किए जाते हैं। क्या ये शब्द वाकई पर्यायवाची हैं या इनमें कोई सूक्ष्म अंतर भी है? "शब्द संस्कार" के इस अंक में आज हम इस पर चलिए थोड़ा विचार-विमर्श करते हैं।

उक्त चारों शब्दों की व्याकरणिक कोटि समुच्चय बोधक अव्यय के रूप में निर्धारित की गई है, अर्थात ये किसी दो शब्द (पद), वाक्यांश या पदांशों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होते हैं। ये अविकारी शब्द हैं अर्थात संज्ञा के लिंग और वचन का इसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और ये यथावत रहते हैं।

जहाँ तक उनकी उत्पत्ति/व्युत्पत्ति का प्रश्न है, ये अलग-अलग भाषा स्रोत से आए हैं। जैसे 'एवं, तथा' ये दोनों संस्कृत के तत्सम शब्द हैं जबकि 'और' हिंदी का शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति मूलतः संस्कृत भाषा से ही हुई है। वहीं 'व' अरबी, फारसी, उर्दू भाषा का शब्द है ।

अब हम इनके अर्थ एवं प्रयोगगत अंतर पर विचार करते हैं -

1. **एवं :** इसके दो अर्थ होते हैं पहला अर्थ है - ऐसे ही या इसी प्रकार। जैसे जब वरदान देने के लिए देवता, ऋषि, मुनि, गुरुजन 'एवम्स्तु' कहते हैं तो उसका आशय होता है - "जैसा तुमने मांगा, ऐसा ही हो।" अंग्रेजी के and की तरह 'और' का बोध कराने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। लेकिन यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'एवं' संस्कृत का तत्सम शब्द होने के कारण अरबी, फारसी या उर्दू शब्दों के साथ 'और' के पर्याय के रूप में इसका प्रयोग उचित नहीं है, जैसे 'आबोहवा' - आब व हवा से मिलकर बना शब्द है, इसलिए संधि विच्छेद कर आब एवम् हवा लिखना अरुचिकर होगा। 'व' उर्दू का शब्द होने के कारण 'आब व हवा' कहना ज्यादा युक्तियुक्त होगा।

2. **तथा :** अब हम 'तथा' शब्द को लें। 'तथा' शब्द भी दो अर्थ में प्रयोग होता है। 'यथा नाम तथा गुण' में प्रयुक्त 'तथा' का अर्थ 'उस जैसा' या 'वैसे ही गुण का' होता है। जैसे वरदान देते समय कोई 'तथास्तु' कहते हैं तो उसका अर्थ हुआ - 'जैसा तुमने चाहा/मांगा है, वैसा ही हो।'

   अंग्रेजी के and की तरह 'तथा' का भी हिंदी में प्रयोग 'और' के लिए किया जाता है, जैसे - राम तथा श्याम। पर जो अरबी, फारसी या उर्दू के शब्द/वाक्यांश होते हैं उनके लिए 'तथा' का प्रयोग अच्छा नहीं माना जा सकता। जैसे - 'नामो निशान मिटा देना' पदबंध के लिए 'नाम तथा निशान मिटा देना' न कहकर "नाम और निशान मिटा देना" ज्यादा सही होगा।

3. **और :** जैसा कि लेख के पूर्वार्द्ध में हम चर्चा कर चुके हैं कि 'और' हिंदी का शब्द है लेकिन इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। संस्कृत में एक शब्द है - 'अपर'। यही अपर शब्द प्राकृत भाषा में 'अपर' हो गया और अपभ्रंश में 'अवर' से 'औऊर/अउर' हुआ, जो हिंदी में आकर 'और' के रूप में रूढ़ हो गया। हालांकि हिंदी में 'और' शब्द अंग्रेजी के and शब्द का पर्याय होने के साथ ही अन्य अर्थों में भी व्यवहृत होता है। जैसे - तुम्हें और क्या क्या चाहिए? तुम्हारे साथ और कौन आया है? बस अब और नहीं, आदि। इन सभी वाक्यों में 'और' का आशय 'and' तो कतई नहीं है बल्कि 'इसके अतिरिक्त/इसके अलावा/इससे ज्यादा' का भाव निहित है जो विशेषण और प्रविशेषण की तरह प्रयुक्त हुआ है।

स्मरण कीजिए कि हिंदी में । additional Secretary को 'अपर सचिव' कहते हैं, क्योंकि 'अपर' का संस्कृत में अर्थ है - 'अन्य/अतिरिक्त/दूसरा या और भी'। राजभाषा (हिंदी) की प्रशासनिक शब्दावली में अवर शब्द दो रूपों में प्रयोग होता है, एक Under के लिए, दूसरा Lower के लिए, जैसे Under Secretary - अवर सचिव, Lower Division Clerk - अवर श्रेणी लिपिक। यहाँ दोनों ही स्थानों पर 'अवर' का भाव 'निम्न/नीचे' में निहित है।

4. **व :** यह अरबी फारसी से उर्दू में आया। हिंदी भाषी भी इसका उन्मुक्त प्रयोग करते हैं। 'और' के विकल्प के रूप में 'व' का प्रयोग यद्यपि लोक व्यवहार में प्रचलित है और स्वीकार्य भी है तथापि अरबी, फारसी और उर्दू के शब्दों के साथ ही इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। जहाँ संस्कृत के मूल शब्द (तत्सम) हों या संस्कृत से परिवर्तित रूप में हिंदी में आए शब्द (तद्भव) हों, उनके साथ 'व' का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। जैसे - ऐसा आचरण हमारी सभ्यता एवं (और/तथा) संस्कृति के प्रतिकूल है।

   इसे इस प्रकार नहीं लिखें - ऐसा आचरण हमारी सभ्यता व संस्कृति के प्रतिकूल है।

   इसी तरह 'हामिद को उसके वालिद व खाला ने पढ़ाया।' को 'हामिद को उसके वालिद तथा खाला ने पढ़ाया।' कहना उचित नहीं होगा।

निष्कर्ष –

यद्यपि प्रयोग की दृष्टि से इन चारों शब्दों में कोई अंतर नहीं है लेकिन व्युत्पत्ति, वाक्य शैली और लोक व्यवहार की दृष्टि से उनमें अवश्य अंतर है। अगर आप हिंदी में औपचारिक या साहित्यिक लेखन कर रहे हैं तो आप तथा/एवं इन दो शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि यह तत्सम शब्द है। और संस्कृतनिष्ठ भाषा में विदेशी मूल के संयोजक शब्दों के प्रयोग से उसकी शुचिता व्याधित होती है, पढ़ने में भी अटपटा लग सकता है। वहीं अगर आप अनौपचारिक या बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं तो आप 'व/और' इन दो शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।

जब एक ही वाक्य में एकाधिक बार 'और' का प्रयोग करना पड़े तो वहाँ आप अपनी सुविधा और अपनी पसंद के अनुसार "और/एवं/तथा/व" इन चारों में से किसी भी शब्द का प्रयोग कर सकते हैं, सिर्फ इस बात का खयाल रखें कि आपकी भाषा में प्रवाह बना रहे। जैसे नीचे लिखे एक ही वाक्य में एकसाथ "और/एवं/तथा/व" का प्रयोग देखिए -

मोहन 'और' गीता ने राधा 'एवं' रमेश को फूल 'व' गुलदस्ता भेंट किए 'तथा' अपने घर आने का भी निमंत्रण दिया।

अब यदि आप फुरसत में हों और भाषा सीखने में रुचि हो तो उपर्युक्त वाक्य का अंग्रेजी में भी झटपट अनुवाद कर डालिए और बताइए कि अंग्रेजी और हिंदी वाक्य विन्यास में आपको इस वाक्य में क्या अंतर दिखलाई पड़ा।

विश्वजीत मजूमदार
सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय

नयी सोच, नयी पहल

हम कितना भी सुंदर घर, मकान या कार्यालय बनवा लें, कितना भी सुंदर महँगा समान उसमें रख लें, सबसे पहली आवश्यकता होती है उस घर और सामान के सुरक्षा की। अगर घर के दरवाजे मजबूत नहीं हैं तो घर कितना भी सुंदर क्यों न हो, सुरक्षित नहीं है। ठीक उसी प्रकार किसि भी उद्दयोग, कार्यालय, संस्थान के सुरक्षा में सुरक्षा विभाग की अहम भूमिका होती है। उद्दयोग जगत में वर्तमान समय में सुरक्षा विभाग को आए दिन नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, सुरक्षा विभाग को मजबूत बनाने के लिए समय-समय आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करना जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण, सुरक्षा के कार्य में दक्षता तथा कोयला चोरी की रोकथाम के लिए सीसीटीवी तथा नई तकनीकों की आवश्यक जानकारियों का होना आवश्यक है।

इसी सोच को मूर्त रूप देते हुए ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की वर्तमान निदेशक (कार्मिक) श्रीमती आहुति स्वाइन द्वारा एक नई पहल की गई। प्रायः ईस्टर्न कोइलफील्डस लिमिटेड में सुरक्षा विभाग का प्रशिक्षण बाहरी एजेंसियों द्वारा कराया जाता था, जो एक जटिल प्रक्रिया थी। इस जटिल प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए वर्तमान निदेशक (कार्मिक) श्रीमती आहुति स्वाइन द्वारा महाप्रबंधक (सुरक्षा) तथा वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) के साथ बैठ कर अहम कदम बढ़ाते हुए ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के सुरक्षा विभाग में ही कार्यरत सुरक्षा निरीक्षकों में से ही योग्य प्रशिकाशकों का चयन करने का निर्देश दिया गया। इसी निर्देश का पालन करते हुए महाप्रबंधक (सुरक्षा) तथा वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु योग्य सुरक्षा निरीक्षकों का चयन किया

गया। वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) मेजर शरदेन्दु तिवारी के नेतृत्व में सात सुरक्षा निरीक्षकों का एक दल बनाया गया जिसके द्वारा ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड स्थित झालबागान क्लब में दिनांक 01.03.2024 से 08.04.2024 तक 127 नवनिर्वाचित सुरक्षाकर्मियों का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा कराया गया।

दिनांक 08.04.2024 को प्रशिक्षित सुरक्षा कर्मियों के दीक्षांत समारोह में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की निदेशक (कार्मिक) श्रीमती आहुति स्वाइन के साथ महाप्रबंधक (सुरक्षा) तथा वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) तथा अन्य विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में नवनिर्वाचित सुरक्षाकर्मियों के परेड की सलामी निदेशक कार्मिक महोदया द्वारा ग्रहण किया गया। नवनिर्वाचित सुरक्षाकर्मियों को शपथ दिलाया गया एवं निदेशक कार्मिक महोदया के उद्‌बोधन के साथ कार्यक्रम का समापन एक सौहार्दपूर्व वातावरण में सम्पन्न हुआ।

निदेशक (कार्मिक) श्रीमती आहुति स्वाइन की इस नयी सोच से एक नई पहल की शुभ शुरुआत हुई जिससे सुरक्षा विभाग में भी एक नई ऊर्जा का संचार हुआ तथा नवनिर्वाचित सुरक्षा कर्मियों में भी ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के प्रांगण में ही सुरक्षा प्रशिक्षण पूरा करके एक खुशी और उल्लास का माहौल है।

संघर्ष, कर्म एवं जोखिम

संघर्ष, कर्म एवं जोखिम ये तीनों तत्वतः समान हैं, बस इनके रूप अलग-अलग हैं और भाग्य इनसे बहुत मजबूती से जुड़ा हुआ होता है, जो व्यक्ति अपने संघर्ष करने की क्षमता एवं अपने कर्मों की गति से भली-भाँती परिचित होता है, वही व्यक्ति जोखिम उठाने का सामर्थ्य भी रखता है और जब संघर्ष, कर्म एवं जोखिम का आपस में सम्मिश्रण होता है तब भाग्य का निर्माण होता है जिससे व्यक्ति उन उपलब्धियों तक पहुँच पाता है जो उसके एक मजबूत व्यक्तित्व, भौतिक एवं अध्यात्मिक विकास की सूचक होती हैं इससे यह प्रतीत होता है कि दुनिया में कोई भी भाग्यहीन नहीं होता, बस बात इतनी सी है कि व्यक्ति उस पथ पर नहीं चलता जहाँ उसका भाग्य उससे जीवनभर चलने को कहता है, और भाग्य सिर्फ तीन गुणों की ही बात करता है, संघर्ष, कर्म और जोखिम।

केतन दीक्षित
सुरक्षा उप निरीक्षक
सुरक्षा विभाग, ई.सी.एल. मुख्यालय

ईसीएल में राष्ट्रीय युवा दिवस, 2024 का हर्ष

भारतीय अध्यात्म व संस्कृति की ऊर्जा से विश्व मानस को आलोकित करने वाले युवा संन्यासी, भारतीय मेधा के अतुल्य हस्ताक्षर, युवाओं के प्रेरणास्रोत, युग द्रष्टा स्वामी विवेकानन्द जी को उनकी जयंती पर ईसीएल के निदेशक (वित्त) मो. अंजार आलम एवं निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री नीलाद्री रॉय की अगुवाई में पूरा ईसीएल परिवार द्वारा मुख्यालय के तकनीकी भवन के प्रांगण में अवस्थित स्वामी जी की प्रतिमा के सम्मुख उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हुए पुष्पांजलि अर्पित किया गया और अंतरराष्ट्रीय-सह-राष्ट्रीय युवा दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम निदेशक (वित्त) एवं निदेशक तकनीकी (संचालन) द्वारा स्वामी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया, तत्पश्चात दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पांजलि दी गई। साथ ही क्रमबद्ध तरीके से सभी उपस्थित जनों द्वारा स्वामी जी को पुष्पांजलि दी गई। कार्यक्रम में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें स्वामी जी की जीवनलीला व विकास गाथा से संबंधित प्रश्न उपस्थित सहभागी जनों से पूछे गए। सही उत्तर देने वाले सहभागी जनों को निदेशक (वित्त) एवं निदेशक तकनीकी (संचालन) द्वारा स्वामी जी की वाणी-पुस्तिका एवं उपहार प्रदान किए गए।

निदेशक (वित्त) महोदय द्वारा स्वयं को स्वामी जी का शिष्य बताते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सहभागी जनों को संबोधित किया गया और स्वामी जी के वागार्थ को सभी के सम्मुख प्रकट किया गया अर्थात उनकी वाणी एवं उनके अर्थ को। साथ ही, निदेशक तकनीकी (संचालन) महोदय द्वारा स्वामी जी को भक्त-वत्सल समझ कार्यक्रम में संबोधित किया गया और स्वामी जी के प्रति अपने समर्पण को व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम में श्रीमती नीलू दास द्वारा स्वामी जी से जुड़े लीलाप्रसंगों को सहभागी जनों के सम्मुख उद्धृत किया गया और कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नमिता माझी सरेन द्वारा किया गया। अंत में सभी सहभागी जनों के मध्य स्वामी जी की वाणी-पुस्तिकाओं का वितरण किया गया।

सांस्कृतिक समागम 2024
राजभाषा विभाग, ईसीएल

कोयला क्षेत्र में सामासिक संस्कृति संस्थापन एवं राम चरित्र सदृश जनमानस में नैतिक शिक्षा के बीजारोपण के लिए ईसीएल के राजभाषा विभाग की ओर से दिनांक 05.03.2024 (मंगलवार) को डिसेरगढ़ क्लब, झालबगान में सांस्कृतिक समागम का आयोजन किया गया जिसका विषय था : भारतीय संस्कृति में राम - एक प्रेरक प्रसंग। समागम में मुख्य वक्ता के रूप में रामकृष्ण मठ, भुज (गुजरात) के स्वामी सुखानन्द जी महाराज एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में रामकृष्ण मिशन आश्रम, आसनसोल के स्वामी सोमात्मानन्द जी महाराज को सादर आमंत्रित किया गया था। परम पूजनीय स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने मानव जीवन मूल्यों का अथाह सागर "केवट प्रसंग" से जुड़े मर्म को भली भाँति समझाया। इस क्रम में स्वामी जी ने कहा कि बहुत कठिन होता है अंत समय में भगवान का नाम ले पाना। इसलिए मनुष्य को अपनी मृत्यु की तैयारी आज से शुरू कर देनी चाहिए।

समागम में निदेशक (कार्मिक) श्रीमती आहुती स्वाईं द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान में उल्लिखित मूल कर्तव्यों के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह "हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।" ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड अपने मूल कर्तव्यों से भली-भाँति परिचित है और उसका पालन पूर्ण निष्ठा के साथ करती है। इसी क्रम में, कोयला क्षेत्र में सामासिक संस्कृति स्थापना एवं जनमानस में राम चरित्र सदृश नैतिक गुणों के बीजारोपण के लिए यह सांस्कृतिक समागम का आयोजन किया गया है। हमारे मध्य परम पूजनीय स्वामी सुखानन्द जी महाराज का सादर आविर्भाव हुआ है। मैं, निदेशक (कार्मिक) पूरे ईसीएल परिवार की ओर से स्वामी जी महाराज का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ, श्रद्धार्घ्य अर्पित करती हूँ। पूजनीय महाराज जी प्रभु श्रीराम से जुड़े प्रेरक प्रसंगों का वाचन करेंगे।

रामस्य चरितं श्रुत्वा धारयेयुर्गुणाञ्जनाः
भविष्यति तदा ह्येतत् सर्वं राममयं जगत ।।

अर्थात् प्रभु श्रीराम के चरित्र, उनके कथा को सुनकर जब मनुष्य अपने जीवन में उन गुणों को धारण करेंगे, तो यह संसार राममय हो जाएगा।

अंत में निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री नीलाद्रि रॉय द्वारा समागम में समस्त गणमान्य जनों एवं श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा गया कि आज भारत राष्ट्र नित्य नयी ऊँचाइयों को छू रहा है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके है। 75 से 100 वर्ष के अंदर हमें सर्वशक्ति संपन्न राष्ट्र बनना है। यही अमृत काल है जिसमें हमें अपना सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित करना है। कोयला की महत्ता सर्वविदित है। ईसीएल परिवार पूर्ण निष्ठा व समर्पण के साथ कोयला का उत्पादन कर रही है। इसके लिए हम सभी को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना होगा। मानसिक स्वास्थ्य के लिए आज सांस्कृति समागम का आयोजन किया गया। हम सभी ने श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का प्रवचन सुना, जिसके लिए पूरा ईसीएल परिवार श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का हृदय की अतल गहराई से धन्यवाद ज्ञापित करता है।

बांग्ला संस्कृति में माँ शब्द का उच्चारण जनमानस के अंतःकरण में पूर्ण रूपेण समाहित हो चुका है। बोलते है कि "म" वर्ण के उच्चारण में जिह्वा हलकी सी ऊपर उठकर अंदर कण्ठ की ओर मुड़ते हुए अमृत की वर्षा करती है। इस अमृत काल में हमें मानसिक एवं शारीरिक रूप से पुष्ट रहने के लिए अमृत पान करते रहने की जरूरत है। हम अमृत पुत्र है। राम शब्द में वहीं "म" वर्ण है जिसके सतत उच्चारण मात्र से उद्धार हो जाता है। राम नाम अद्भुत है अनोखा है। नित्य राम नाम लेने से हम सभी की शक्ति बैखरी से मध्यमा, मध्यमा से पश्यंती और पश्यंती से परा तक पहुँच कर आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाती है।

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज को सादर नमन करता हूँ। आज आपने हम सभी को राम नाम एवं उनके गुणों से अवगत कराया। हम सभी कृतार्थ हुए और आपको श्रद्धार्घ्य अर्पित करते है।

यह आयोजन विशेष रूप से कंपनी के केवट हमारे निदेशकगण, भारतीय संस्कृति के संवाहक श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधिगण, समस्त विभागीय प्रधानों एवं ईसीएल कर्मियों के लिए किया गया था ताकि कोयला क्षेत्र से जुड़े समाज में सामासिक संस्कृति की समझ (verstehen) विकसित हो सके।

चित्रकला

श्रेया मुर्मु

कक्षा - 7

असेंबली ऑफ गॉड चर्च स्कूल (सोदपूर)

पिता - सोनाराम मुर्मु (सोदपूर कर्मशाला)

बोलचाल की भाषा में शिक्षा

हमारे देश में प्राचीन काल से सभी विद्याएँ संस्कृत में ही विद्यमान रहने के कारण, विद्वानों तथा आम जनता के बीच एक अगाध समुद्र-सी दूरी बनी रही। बुद्धकाल से लेकर चैतन्य तथा श्रीरामकृष्ण तक जो भी महापुरूष लोक-कल्याण हेतु अवतीर्ण हुए, उन सबने आम जनता की भाषा में जनता को उपदेश दिया है। पाण्डित्य उत्तम है, मगर पाण्डित्य का प्रदर्शन क्या जटिल, अप्राकृतिक तथा कल्पित भाषा को छोड़ अन्य किसी भाषा में नहीं हो सकता? कलात्मक निपुणता क्या बोलचाल की भाषा में नहीं प्रदर्शित की जा सकती? स्वाभाविक भाषा को छोड़ एक अस्वाभाविक भाषा को तैयार करने से क्या लाभ? घर में हम जिस भाषा में बातचीत करते हैं, उसी में हम सारे पाण्डित्यपूर्ण विषयों पर विचार भी करते हैं; तो फिर लिखते समय हम क्यों जटिल भाषा का प्रयोग करने लगते है? जिस भाषा में तुम अपने मन में दर्शन या विज्ञान के बारे में सोचते हो, आपस में बाते करते हो, उसी भाषा में क्या दर्शन या विज्ञान नहीं लिखा जा सकता? यदि कहो - नहीं, तो फिर उस भाषा में तुम अपने मन में अथवा कुछ व्यक्तियों के साथ उन सब तत्त्वों पर विचार-विमर्ष कैसे करते हो? जिस भाषा में हम स्वाभाविक रूप से अपने मन के विचार प्रकट करते हैं, जिस भाषा में हम अपना क्रोध, दुःख तथा प्रेम आदि व्यक्त करते हैं, उससे अधिक उपयुक्त भाषा और कौन-सी हो सकती है! अतः हमें उसी भाव, उसी शैली को बनाए रखना होगा। उस भाषा में जितनी शक्ति है, उसमें जैसे थोड़े-से शब्दों में अनेक विचार व्यक्त हो सकते हैं तथा उसे जैसे चाहो, घुमा-फिरा सकते हो, वैसे गुण किसी कृत्रिम भाषा में कदापि नहीं आ सकते। भाषा को ऐसा बनाना होगा - जैसे शुद्ध इस्पात, उसे जैसा चाहो मोड़ लो, पर फिर वैसे का वैसा; कहो तो एक चोट में ही पत्थर को काट दे, पर धार न टूटें। हमारी भाषा, संस्कृत के समान बड़े-बड़े निरर्थक शब्दों का प्रयोग करके और उसके आडम्बर की - केवल उसके इसी एक पहलू की - नकल करते-करते अस्वाभाविक होती जा रही है। भाषा ही तो राष्ट्र की उन्नति का प्रधान लक्षण एवं उपाय है। ..... भाषा विचारों की वाहक है। भाव ही प्रधान है, भाषा गौण है। ..... जो भाषा, शिल्प तथा संगीत भावहीन तथा निष्प्राण है ; वह किसी भी काम का नहीं। अब लोग समझेंगे कि राष्ट्रीय जीवन में ज्यों-ज्यों स्फूर्ति आती जाएगी ; त्यों-त्यों भाषा, शिल्प, संगीत आदि अपने आप भावमय तथा जीवन्त होते जाएँगे ; दो प्रचलित शब्दों से जो तात्पर्य प्रकट होंगे, वे दो हजार छँटे हुए विशेषणों से भी नहीं होंगे।

शिक्षक की महानता उसकी सरल भाषा में निहित है।

भाषा सम्बन्धी मेरा आदर्श मेरे गुरूदेव श्रीरामकृष्णदेव की भाषा है, जो थी तो निन्तात बोल-चाल की भाषा, परन्तु साथ ही भावों को परम अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाली भी थी।

स्वामी विवेकानन्द

RIDGE